यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाड़ी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

भूमिका ।

यह हिन्दीकी चौथी पुस्तक कतिपय शिक्षा-विभागीयपुस्तकोंके आधारसे बनाई गई है ।

जहांतक होसका है, इसमें फारसी और उर्दू शब्द नहीं आने पाये । जिससे बालकोंका बाल्यकालसेही साहित्यमें प्रवेश होसके ।

आशा है:-जिनके लिये यह बनाई गई है, उनको विशेष लाभकारक होगी ।

(आशुकवि) शिवदास पाण्डेय.

चौथीपुस्तककी विषयानुक्रमणिका।

हिन्दीकी चौथी पुस्तक।

पाठ १.

परमेश्वरको धन्यवाद (कविता)

शब्दार्थ।

जगदीश्वर (जगत् = संसार। ईश्वर = स्वामी) संसारके स्वामी। धन्य = वाह. वाह, शाबास। उपजायो = पैदा किया। क्षिति = पृथ्वी। नभ = आकाश। पावक = अग्नि। पवन = हवा। विस्तार = फैलाव। नृप = राजा। हिं = को। पवि = वज्र। तृन = तिनका। पखान (पाषाण) = पत्थर। जलधि = समुद्र। अल्पसर = छोटा तालाब, तलैया। लघु = छोटा। उदधि = समुद्र। छनमान = पलभरमें। धनद = धनवान। रंक = दरिद्री। समरथ = शक्तिमान्। कृपानिधान (कृपा = दया। निधान = स्थान) दयाके स्थान, दयालु। वरु = चाहे। महि = पृथ्वी। रज = धूलके छोटे छोटे कन। विभु = प्रभु, ईश्वर। किमि = कैसे। दीनबन्धु (दीन = गरीब। बन्धु = भाई) गरीबोंके भाई, परमेश्वर। करुणायतन =

दयासागर। त्रिलोकीनाथ (त्रिलोकी = तीनों लोक, अर्थात् आकाश, पाताल, मृत्युलोकके नाथ = मालिक) तीनों लोकोंके पति, भगवान्। अभिमान = घमंड। पैहै = पावेगा। गरीबनिवाज (गरीब = दीन। निवाज = दयालु) दीनदयालु। पाँयन = पैरोंमें। पनही = जूते। गजराज = श्रेष्ठ हाथी। नेक = तनिक, थोड़ी। निहाल = प्रसन्न। करुणासिंधु (करुणा = दया। सिंधु = सागर) दयासागर। मनुज = मनुष्य। विश्राम = शांति। कटाक्ष = दृष्टि। रिपुदल (रिपु = वैरी। दल = समूह। शत्रुओंका समूह, अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर यह छह आत्माके शत्रु।

दोहा-जगदीश्वरको धन्य जिन, उपजायो संसार।
छिति, जल, नभ, पावक, पवन करि इनको विस्तार॥१॥
नृपहिं, दास, दासहिं, नृपति, पवि, तृण, तृणहिं, पहान।
जलधि अजलधर, लघु गरुहिं, उदधि करै छनमान॥२॥
धनद रंक, रंकहि धनद, नीचहि करत महान।
करहि महानहिं नीच जो, समरथ कृपानिधान॥३॥
बक मर्दि मन बिनती येह, नम तोहि दिनरैन।
हिन्दु जिनि बच सुहित, विक्रम रिधि बाहिर॥४॥
दीनबन्धु करुणायतन धन्य त्रिलोकीनाथ।
बिनती सुन बालक कृपा करहु अनाथ सनाथ॥५॥

के पूज्यपतिका देहान्त होगया। जिससे महारानी और प्रजाको महान् कष्ट प्राप्त हुआ।

श्रीमती महारानीका मुख्य राज्य तो इंग्लिस्तान देश था। लेकिन इनके समयमें अंग्रेजी राज्य प्रायः सम्पूर्ण पृथ्वीमें फैलगया—जिससे चकित होकर लोग यह कहावत कहा करतेहैं:-कि अंग्रेजी राज्यमें सूर्य नहीं डूबता। महारानीके राज्यकालमें ग्रेटब्रिटनकी जनसंख्या दूनी धन तिगुना और व्यापार छः गुना बढ़गया था और हिन्दुस्थानकी भी प्रत्येक बातमें अच्छी उन्नति हुई थी। यह महारानी अपनी प्रजाको पुत्रके समान मानती थीं।

हिंदुस्थानका राज्य पहिले इंग्लिस्तान देशकी "इस्ट इंडिया नामक" कंपनी करती थी। पर सन १८५७ ईस्वीके बलवेके कारण महारानीने यह राज्य अपने अधिकारमें लेलिया। तबसे इस देशका सम्बन्ध इंग्लैंडके राजवंशसे हुआ।

सन १८५८ ईस्वीमें महारानीने एक घोषणापत्र प्रचारित किया:-"कि अब हिंदुस्थानियोंसे अंग्रेजोंके ही समान व्यवहार किया जायगा। और कोई भी मनुष्य अपने स्वत्वोंसे वंचित न किया जायगा"। सन १८७७ ई. में दिल्लीमें एक भारी दरबार हुआ था, [illegible]

की" पदवी धारण की थी। महारानीको राज्य करते सन १८८७ ईस्वीमें ५० वर्ष होगये थे। इससे इस बातकी खुशी मनानेके लिये इसवर्ष संपूर्ण अंग्रेजी राज्यमें जुबली मनाई गयी थी। और सन १८९७ ई० में इनके राज्यशासनके ६० वर्ष पूर्ण होजानेपर संपूर्ण अंग्रेजी राज्यमें फिर भी "हीराजुबिली" बड़े धूमधामसे मनायी गयी थी।

महारानीके राज्यत्वकालमें नीचे लिखे हुए आठ मन्त्री हुये थेः—१ लार्ड मेलबोर्न, २ सर राबर्ट पील, ३ लार्ड जान रसल, ४ लार्ड डर्बी, ५ लार्ड पामर्स्टन, ६ मिस्टर डिजायली, ७ मिस्टर ग्लैडस्टन, ८ लार्ड साल्सबरी।

सन १९०१ ई० की २२ वीं जनवरीको यह महारानी ६४ वर्ष राज्य करके ८२ वर्षकी अवस्थामें परलोकको सिधारगई। इतने दीर्घ समय तक इंग्लैंडके किसी भी राजाने राज्य न किया था। महारानीके अन्तःकरणमें पतिप्रेम अन्त समय तक दृढ बना रहा था। क्योंकि अन्तकालम महारानीने अपने पतिका तीन बार नाम लेकर प्राण त्याग किया था।

इनके पश्चात् इनके ज्येष्ठ पुत्र "सप्तम एडवर्ड" नामसे इंग्लिस्तानके राजा और भारतवर्षके महाराजा हुए।

पाठ ३.

आगरेका ताजमहाल।

रूपलावण्य = शरीरकी सुन्दरता। मोहित = वशीभूत। स्मृति = यादगार।

जहांगीरकी प्यारी बेगम नूरजहांकी भतीजी मुम-ताज-महल अत्यन्त सुन्दरी थी, उसका पहिला नाम अर्जुमन्दबानू था। उसके रूपलावण्यको देखकर शाह-जहां उसपर अत्यन्त मोहित था, इससे उसके पतिने उसे त्यागदिया था, तब शाहजहांने उससे अपना वि-वाह करलिया।

शाहजहांके मुमताज—महलसे चार लडके और तीन लडकियां जन्मीं। अपनी मृत्युका पहिलेसे ही अ-नुमान करके एक दिन उसने शाहजहांसे कहाः— "क्या मेरे मरनेपर भी तुमको मेरी याद बनी रहेगी तुम तो मेरे मरते ही अवश्य किसी दूसरी औरतसे विवाह करलोगे ?" शाहजहांने कहा कि "मैं तुमको कभी नहीं भूलसकता. इसके सिवाय तुम्हारी स्मृति-में मैं एक भवन बनवाऊंगा, जिससे इस संसारमें तुम्हारा नाम सदा बना रहेगा. इसके थोडे दिनके प-श्चात मुमताज-महलका स्वर्गवास हुआ। अत्यन्त गं-भीर स्वभाव होनेपर भी शाहजहांने उसके लिये कई

दिनों तक रोदन किया। फिर उसीकी यादगारमें उस ने आगरेमें ताजमहल नामक भवन बनवाना आरम्भ किया। उसके बनवानेके लिये शाहजहांने ऐसी जगह पसन्द की, कि जहां समाधिभवन बननेसे वह महलमें बैठेबैठे दिखाई पड़े। ताजमहलके चारों ओर परकोटा खिंचा हुआ है। परकोटेके भीतर एक मनोहर उपवनके पास ही ताजमहल शोभायमान है। परकोटे के भीतरी भूमिका क्षेत्रफल १२४०+६६७ हाथ है। वह ताजमहलके बाहरका सहन देखनेमें बड़ा अच्छा मालूम होताहै। वह चारों ओर छारदिवारीसे घिरा हुआ है। और उसके भीतर जानेके लिये चार द्वार हैं। सबसे बड़ा फाटक ९३ हाथ लंबा और ७३ हाथ चौडा है। इस फाटकमेंसे सहन और बागको रास्ता गया है। बागमें सफेद संगमरमरके हौज हैं, फिर मुमताज महलका समाधिमंदिर है। समाधिमंदिर एक चौकोनी, चबूतरेपर है। उसपर लम्बी सुराहियां हैं। चबूतरा हरओर २०८ हाथ लम्बा और १२ हाथ ऊंचा है, जो सफेद संगमरमरसे बना है। चबूतरेके चारों कोनों पर चार [illegible] मीनारे हैं, जो प्रत्येक ७५ हाथ [illegible] मुमताज महलकी समाधि [illegible] हाथ ऊंचा एक गुम्बज है। [illegible] हाथ है। गुम्ब- [illegible] है। इनमेंसे

प्रत्येक २१ हाथ ऊंची है। गुंबजके नीचे बीचोंबीच दो समाधि हैं। ताजमहलके बाहरकी शोभासे भीतरकी शोभा अधिक मनोहर है। भीतरकी दीवालोंमें अनेक रंग बिरंगे बहुमूल्य पत्थरोंको जड़कर बेलबूटे फल फूल आदि बनाये गये हैं और अत्यन्त कौशलसे कुरानकी आयतें भी लिखी गई हैं। इसे ईसा अफन्दी नामक एक कारीगरने बनाया था, और चित्रकारीके काममें लिगज नगरके आमानतखां ने सहायता दी थी। इनके अतिरिक्त तुर्किस्थान, फारशिया, दिल्ली, पंजाब, और बगदादके अनेक कारीगर काम किया करते थे। जयपुर और राजपूतानेसे संगमरमरका पत्थर मंगवाया जाता था। एक गज लंबे और एक गज चौड़े संगमरमरके पत्थरके टुकड़ेका मूल्य ४०) था। नार—बड़ौदेसे काला पत्थर संगमूसा ९० प्रतिदिन गजके भावमें आता था, और चीनसे प्रतिदिन गज ५६०) के भावसे स्फटिक पत्थर मंगाया जाता था। पंजाबसे "हीरे" और बगदादसे "पन्ना" [illegible] [illegible] [illegible] "लाजि [illegible] [illegible] लाई गई थी।

[illegible] १६३० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १८४,६५,१८४ रुपये [illegible] [illegible]

इसकी लागत ४,११,४८,८२६ रुपये कहते हैं। इसके फाटक चाँदीके थे। बहुमूल्य मोतीकी मालासे समाधि ढाँपी गई थी। शाहजहाँने इसके प्रबन्धके लिये तीस गाँव लगा दिये थे, जिनकी सालाना आमदनी चार लाख रुपये वार्षिक थी। शाहजहाँने अपनी समाधिके लिये, ताजमहलके समान यमुनाके दूसरी ओर एक दूसरा रौजा बनवाना चाहा था, किन्तु वृद्धावस्थामें उसके पुत्रोंके अन्यायके कारण उसकी इच्छा पूर्ण न होसकी। इसमें सन्देह नहीं, कि ताजमहलके समान दूसरी इमारत इस पृथ्वीमें नहीं है।

पाठ ४.

भगवान् रामचन्द्रका विवाह।

(भगवान् रामचन्द्र भाग १)

पटरानियाँ = मुख्य रानियाँ। परिपूर्ण = पूरा।
सर्वज्ञ = संसारकी सम्पूर्ण बातोंको जाननेवाला।
परामर्श = सलाह। आत्मप्रशंसा = अपनी बड़ाई।

अत्यन्त प्राचीन कालमें अयोध्यापुरीमें सूर्यवंशी महाराज दशरथ राज्य करते थे, उनकी तीन रानियाँ थीं, जिनके नाम कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा पटरानी थीं वृद्धावस्थामें प्रविष्ट हो, पर भी राजा के कोई पुत्र न हुआ, इस कारण शृङ्गी ऋषिके द्वारा

इन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया, पूर्णाहुतिके समय हवन, कुण्डसे प्रगट होकर साक्षात् अग्निने राजाको खीरसे परिपूर्ण पात्र दिया, और कहा, कि इसे अपनी रानियोंको खिलाओ, इसके प्रभावसे अवश्यही तुम्हारे चार पुत्र होंगे। राजाने अग्निदेवकी आज्ञासे अत्यन्त प्रसन्न होकर अपनी तीनों पटरानियोंको वह हविष्यान्न खिला दिया, जिससे कौसल्यासे रामचन्द्र, कैकेयीसे भरत और सुमित्रासे लक्ष्मण और शत्रुहन उत्पन्न हुए। देवकी कृपासे वृद्धावस्थामें चार पुत्ररत्न पाकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुए। जिस समय रामचन्द्रकी अवस्था पन्द्रह वर्षकी हुई, उस समय विश्वामित्र महामुनिने रामचन्द्र और लक्ष्मणको अपने यज्ञकी रक्षा करनेके लिये मांगा। पिताकी आज्ञासे मुनिके साथ जाकरके राम और लक्ष्मणने ताड़का नामक राक्षसीको और उसके पुत्र सुबाहुको मारडाला, और मारीच नामक राक्षस रामके बाणसे उड़कर लंकाके समीप जाकर गिरा। अपने शत्रु राक्षसों का विनाश देखकर मुनिने सावधान होकर अपना यज्ञ परिपूर्ण किया, इसके पश्चात् बला और अतिबला नामक दो महान विद्याएं राम और लक्ष्मणको प्रदान कीं। इन विद्याओंको जाननेसे मनुष्य भूक, प्यास, वृद्धपन, रोग, शोक, मोह आदिसे ग्रसित न होता था, और सर्वज्ञ होजाता था। इसके पश्चात् विश्वामित्र मुनि

दोनों भाईयोंको साथ लेकर सीताके स्वयंवर होनेके समाचार सुनकर जनकपुर गये, मार्गमें रामचन्द्रजीने शिलारूपी अहल्याको मुनिराजके परामर्शसे उद्धार किया। राजा जनकने मुनिराजके समेत राम, लक्ष्मणका आगमन सुनकर अत्यन्त सन्मान किया, और अपने प्रणका समाचार कह सुनाया। तब रामचन्द्रजीने सम्पूर्ण राजाओंके देखते हुए शिवजीके महान गुरुतापूर्ण धनुषको तोडडाला, जिसे कि बडे बडे बलवान राजा, देव, दानव तथा गन्धर्व भी तोड न सके थे। धनुषके टूट जाने पर राजा जनकने दशरथ नरेश्वरको बरात सहित बुलवाया, तब दशरथजी वशिष्ठ आदि महर्षियों समेत भारी बरात लेकर आये, शुभ मुहूर्तमें जानकीजीका व्याह रामचन्द्रजीसे कियागया। इसके पश्चात् जनकजीने अपनी कन्या उर्मिला लक्ष्मणको दी तथा अपने छोटे भाई कुशध्वजकी माण्डवी तथा श्रुतकीर्ति, इन दोनोंका भरत तथा शत्रुहनसे व्याह कर दिया। व्याह होनेके पश्चात् जब दशरथजी अपने पुत्र तथा पुत्रवधुओंके समेत अयोध्या नगरीको लौटने लगे, उस समय विष्णुभगवानके अंशावतार परशुरामजीने शिवजीके धनुषभग होनेका समाचार सुनकर उनको मार्गमें रोका और कहा कि तुम्हारे शिवजीके धनुषके तोडनेका समाचार सुनकर हमको महान् आश्चर्य हुआ है, हम [illegible] इससे भी

अत्यन्त गौरवशाली विष्णुदेवके इस धनुषको (जो मेरे पास है) तुम तोडकर अपना प्रभाव मुझे दिखाओ अथवा—व्यर्थ आत्मप्रशंसा करना परित्याग करके मुझसे युद्ध करो।" रामचन्द्रजीने परशुरामजीके वचन सुनकर उनके हाथसे इस वैष्णव धनुषको लेकरके तुरन्त ही तोड़डाला; तब तो परशुरामजी रामचन्द्र का अद्भुत प्रभाव देखकर अत्यन्त नम्रतासे उनकी विनती करके तप करनेके लिये वनको चलेगये. और दशरथजीभी परम आनन्दित होकर बरात सहित अयोध्यापुरीमें प्रविष्ट हुए। इस समय चारों भाईयोंको पत्नी सहित देखकरके कौसल्यादि माताओं तथा नगरनिवासियोंको जो अत्यन्त आनन्द हुआ, उसके वर्णन करनेकी शक्ति देवताओंको भी नहीं है। इसके पश्चात् दशरथजीने संपूर्ण आगत बरातियोंको सम्मान सहित विदा किया, और विश्वामित्रजी भी दशरथ राजासे विदा मांगकर तपस्या करनेके लिये हिमालय पर्वतको चलेगये।

पाठ ५.

[illegible]

= अधीनता। साम्राज्य = महाराज्य। विनय = नीति।

अगले समयमें यूरोपखंडके निवासी भारतवर्षके विषयमें यह सुना करते थे:-कि वह बहुत धनवान् तथा व्यापारी देश है; परन्तु अरब और ईरान आदि देशोंके लुटेरे निवासियोंके भयसे और मार्गके कठिनताके कारण स्थलमार्गसे वे यहां नहीं आसकते थे। इसी कारण बहुत दिनोंसे वे जलपथकी खोजमें थे।

पहिले पहिल वास्कोडिगामा नामक एक पोर्तुगाल देशनिवासी, कुछ जहाज लेकर आफ्रिकाको घूमता हुआ कालीकट आया। इन्होंने पहिले पहिल पोर्तगाल और भारतवर्षमें व्यापारका सम्बन्ध स्थापन किया।

पोर्तगालवालोंके पश्चात् हालेंड, इंग्लेंड और फ्रांस देशके निवासी इस देशमें आए। समुद्रके किनारे रहनेके कारण इन देशोंके निवासी नाविकविद्यामें बहुत प्रवीण थे। क्योंकि इनको व्यापार और युद्धके लिये व्यापारी और जङ्गी जहाज रखने पड़ते थे। इन पाँचोंमें केवल अंग्रेज ही भारतवर्षमें सफल हुए। और इन्हींका राज्य अबतक इस देशमें विद्यमान है। इस का कारण यह है कि [illegible]

और [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रने आगई। हालैंडका राज्य अब हिन्दुस्थानमें कहीं नहीं है। परन्तु पोर्तगालके अधिकारमें गोवा, दमन, दयू, और फरासीसियोंके अधीन माही, कारीकल, चन्दनगर और पांडुचेरी अबभी हैं।

अंग्रेजोंके यहां आकर इतने देश विजय करने और साम्राज्यकी नींव दृढ करनेका हाल आगे लिखा जावेगा।

पाठ ६.

वायुका दूपित होना।

(स्वच्छताभाग १)

संयोग = मेल। पृथक् = अलग। तुल्य = समान। तत्व = जो पदार्थ किसी प्रकारके मेलसे न बना हो। प्राणान्त = मृत्यु। विशेष = अधिक करके।

प्राचीन समयमें लोगोंका यह अनुमान था:-"कि वायु और किसी पदार्थके संयोगसे नहीं बनी" परन्तु आजकल विद्वानोंने परीक्षा द्वारा यह सिद्ध कर दिया है, कि वायुमें यह चार प्रकारके वायुरूपी पदार्थ मिले हुए हैं:-(१) आक्सिजन (२) नैट्रोजन (३) कार्बनिक एसिड ग्यास, और (४) पानीकी भाफ) यह सब देखनेमें एक से समान है, परन्तु इनके गुण पृथक् पृथक् है। जिस प्रकार घी और महुएका तल देखनेमें एक ही तुल्य हैं पर दोनोंके गुण जुदे जुदे हैं

जिस वायुसे प्राणियोंका पोषण होता है, उसे अंग्रेजीमें आक्सिजन (प्राणप्रद) वायु कहते हैं। यह वायु अत्यन्त तीक्ष्ण है, यदि वायुमंडलमें केवल यही वायुतत्त्व रहता, तो सम्पूर्ण प्राणी जलकर मर जाते। इसलिये इसकी तीक्ष्णता कम करनेके लिये इसमें नेट्रोजन (जीवान्तक) नामक तत्त्व मिला हुआ है जो प्राणियोंको अत्यन्त हानिकारक है। इसमें जलता हुआ दीपक बुझजाता है। परन्तु यह दोनों पदार्थ इस परिमाणसे आपसमें मिले हैं, कि इससे जीवधारी भलीभांति श्वास लेसकते हैं। और वस्तुएं भी जलसकती हैं प्राणियोंके श्वास लेनेसे कार्बनिक एसिड ग्यास (हिंसक वायु) निकलती है, यही वृक्षोंका मुख्य जीवन है। श्वास लेते समय यदि यह प्राणियोंके भीतर चलीजाये, तो इससे तुरन्त ही उसका प्राणान्त हो जावेगा। यह वायु तौलमें अत्यन्त भारी है। इसी प्रकार सूर्यकी उष्णतासे पानी भाफ बनकर सदा ऊपर उठता रहता है। इसीसे बादल बनते हैं, और जल भी बरसता है। यदि वायुमें पानीकी भाफ न मिली होती, तो हम [illegible] सुलस जाता [illegible] वृक्ष आदि [illegible]।

[illegible] मिलना [illegible] वायु [illegible] इसमें अधिक [illegible] निकलता है, इसके [illegible]

सर्वदा वायुका बहुतसा भाग दूषित होता रहता है पदार्थोंके जलनेसे प्राणप्रद वायु खर्च होती है, और उसके बदले हिंसक वायु बनती है। यदि एक बोतल में जलती हुई बत्ती डालें, और उसका मुंह कागसे बन्द करदेवें, तो वह बुझ जावेगी। क्योंकि उस बोतलकी प्राणवायु उस बत्तीके जलनेमें खर्च हो जावेगी। इस प्रकार पदार्थोंके जलनेसे भी वायु विगडती रहती है। जब कोई जीवधारी मर जाता है, तो उसके सडनेसे बहुतसी हानिकारक वायु निकलकर बाहरी वायुमें मिल जाती है। कूडा कचरा और भाजी तरकारियोंके छिलके, जिनको लोग असावधानीसे घरोंके आसपास फेंकदेते हैं, सडकर वायुको बिगाडते हैं।इसी प्रकार गांवके किनारे कूडाकचरा और गोबरके बडे २ ढेर लगाये जाते हैं, जिनके सडनेसे भी शुद्ध वायुका बहुतसा अंश मैला होता रहता है। इस लिये ऊपर लिखे हुए स्वाभाविक तीन कारणोंसे शुद्ध वायु सदा बिगडती रहती है, जैसेः—(१) प्राणियोंके श्वास लेनेसे (२) पदार्थोंके जलनेसे और (३) पदार्थोंके सडनेसे।

इनके सिवाय कसाई, चमार, रंगरेज आदि नीच पेशेवालोंसे भी वायु बिगडती है इससे इनको बस्तीके समीप न बसाना चाहिये। बस्तीके समीप मुर्दे गाड़ने [illegible] बहुतसी हिंसक वायु उत्पन्न होती

है। पहुतेसे छोटे छोटे गांवोंमें बहुधा मनुष्य पायखाना और पेशाब घरोंके समीप इधर उधर किया करते हैं, और शहरोंके भी पायखाने गन्दे और सौड़दार रहते हैं। घरोंमें इधर उधर निस्तारका पानी असावधानीसे फेंक दिया जाता है, इससे भी वायु दूषित होती है।

वायुके बिगड़नेसे प्राणियोंके नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिये आरोग्यताके लिये वायुकी स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

पाठ ७.

फूल।

(कृषि-भाग-१)

वृक्षके भेदोंमें भागोंमें पुष्प अत्यन्त ही उपयोगी भाग है। इससे ही बीजकी उत्पत्ति होती है। इसके चार भाग होते हैं यथा:-(१ बाहरकी [illegible] पत्तियां (२) पंखड़ी (३ पुंकेसर (४) गर्भकेसर और (५ पराग [illegible]

[illegible]

इसके नीचे तीन चार हरी पत्तियां हैं। इनके उखाड़-नेपर फूलकी पेंदीके आसपास छोटी गोल टोपी दीख पड़ती है। गुलाई और गहराईके कारण ही यह फूलकी कटोरी कही जाती है। पुष्पकी पखुरियां नीचे कटोरीमें जुड़ी हुई हैं। इसी कटोरीके तलीमें बीजका घर है, और यही समय पाकर फल बनजाताहै। पुष्पके बीचमें नल है। इसको बीगे कहतेहैं, इसके बीचमें एक खम्भ है,जो नीचे बीजके घरसे और ऊपर एक बड़े दानेसे लगा हुआ है,इसे गर्भकेसर कहतेहैं। नलके समीप ही छोटे छोटे पीले दाने हैं, यह परागकेसर कहे जाते हैं। इनकी धूल उड़कर बड़े दानेमें चिपक जाती है। इसी धूलके लेपके कारण फलमें बीज पड़ता है, और पुष्ट होता है। जब तक गर्भकेसर और परागकेसरका संयोग नहीं होता, तब तक बीज नहीं पड़सकता।

पुष्पोंमें गर्भकेसर और परागकेसरकी केवल यही पहिचान है:—कि बीजके घरमें जो खम्भ लगा रहता है वही गर्भकेसर है। और कटोरी और पखुरियोंके नीचेकी डंडियों और नल परागकेसर है

ऐसे और कितनेक पुष्पोंमें खम्भके आसपास नल नहीं रहते, केवल परागकेसरके ऊंचे छोटे दाने [illegible] डंडीके किनारे लगे रहते हैं। उदाहरण [illegible] कई पुष्पोंमें परागकेसर और गर्भकेसर [illegible]

मकदूनियांके दक्षिणमें यूनान देश है, इसकी दशा इससमय अत्यन्त शोचनीय थी, इस कारण सिकन्दरको इसे अपने अधीन करनेमें कठिनता न पड़ी। उन बहुतसे देशोंमें जो सिकन्दरने विजय किये थे, यह पहिला ही देश था।

सिकन्दरका विचार संपूर्ण पृथ्वी विजय करलेनेका था। थोड़े ही दिनोंमें उसने एशियाकोचक, सिरिया, मिसर और इरान अपने अधीन कर हिंदुस्थान विजय करनेका पक्का इरादा किया। नीलनदी और हिन्दूकुशपर्यंतके मध्यवर्ती देश विजय करनेमें उन्हें ९ वर्ष व्यतीत होगये, फिर वह हिन्दूकुश पारकर सिन्धुनदीके तट पर पहुंचा। यहांके राजाने कुछ भेंट देकर उसमें संधि करली। इसके पश्चात् सिकन्दरने झेलम नदी तक आगे बढ़ गया पोरससे युद्ध किया, जिसका वृत्तान्त सिकन्दरकी चिट्ठियोंमें विदित होता है। झेलम नदीके तट पर कुछ दिन विश्राम करनेके पश्चात् [illegible] तब फिर आँधी बड़ी
[illegible] प्यादे और
[illegible] ना
[illegible] पर
[illegible] लगी।
[illegible] और

जब तक वह लड़सका तब तक हाथीने उसकी रक्षा अत्यन्त शूरतासे की और जब जान लिया, कि यह बहुतसे घावोंसे घायल होकर गिरनेवाला है, तब उसे बचानेके लिये धीरेसे पृथ्वीपर बैठगया और सूंड़से सब बाण उसके शरीरमेंसे खींचलिये। जब सिकन्दरने उससे प्रश्न किया कि तुम्हारा सन्मान किस प्रकार होना चाहिये ? तब उसने उत्तर दिया, कि मेरा सन्मान राजाओंके समान होना चाहिये इस पर सिकन्दरने कहा, कि औरभी कुछ कहना है ? उत्तर दिया, कि "राजा" शब्दमें सब बातें आगई। इसपर सिकन्दरने प्रसन्न होकर उसका राज्य उसे ही दे दिया और अन्यान्य बड़े २ प्रदेश भी उसके राज्य में मिला दिये।

पाठ १०.

गुरुभक्ति।

[illegible]

है। उस समय छात्रगण किसी दशामें भी गुरुके वचनोंकी अवहेलना न करते थे। प्राचीन समयमें उपमन्यु नामक एक शिष्य अपने गुरुदेवके समीप विद्याभ्यास करता था, और प्रतिदिन विद्याभ्यास करनेके पश्चात् भिक्षा मांगकर अपने गुरुको समर्पण किया करता था, इसके पश्चात् दूसरी वार भिक्षा मांगकर लाकर अपना निर्वाह करता था। एक दिन गुरुने अपने शिष्यकी परीक्षा लेनेके लिये उसे यह आज्ञा दीः—कि तुम जो दो वार भिक्षा मांगकर लाते हो, इससे गृहस्थोंको महान् कष्ट होता है, इससे तुम दूसरी वार भिक्षा मांगकर मत लाया करो। गुरुभक्त शिष्यने गुरुकी आज्ञानुसार दूसरी वार भिक्षा मांगना परित्याग करदिया, और आप गुरुकी गौओंके दूधसे अपना निर्वाह करने लगा। दूधके वर्जने पर गुरुके परमभक्त शिष्यने गौओंका दूध पीना भी छोड़दिया, और बछड़ोंके मुखमें जो गौओंके दूधका फेन लगा रहता था, उसे चाट चाट कर अपना निर्वाह करने लगा। एक दिन गुरुने उपमन्युसे फिर कहा, कि बछड़ोंके मुखमें लगे हुए दुग्ध-फेनके चाटनेसे वे भूखे रह जाते हैं, इसलिये तुम अब बछड़ोंके मुखका फेन मत पिया करो। तब तो उपमन्यु अत्यन्त कष्टित होकर समय व्यतीत करने

लगा। एक दिन अत्यन्त क्षुधातुर होकर उसने आकके पत्ते चबालिये, और उनकी तीक्ष्णताके कारण अंधा होकर कुएँमें गिरपड़ा। परम तपस्वी गुरुदेवने योगबलसे उसकी सम्पूर्ण विपत्ति जानली, और तुरन्त ही वहाँ पर आकर गुरुभक्त उपमन्युसे यह वचन कहा:-हे पुत्र! तुम्हारी गुरुभक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ, अब तुम देववैद्य-अश्विनीकुमारोंकी विनती करो, तब उनकी कृपासे तुमको फिर भी नेत्र प्राप्त होंगे। गुरुकी आज्ञा पाकर उपमन्युने अश्विनी-कुमारोंकी विनती की, तब उसके नेत्र फिर भी ज्योंके त्यों होगये।

एक दिन गुरुदेवके खेतकी मेंड़ फूटगई, तब गुरुने अपने आरुणी नामक शिष्यको अपनी मेड़ बाँधनेके लिये खेतमें भेजा। आरुणीने खेतमें पहुँचकर मेड़ बाँधनेके अनेक उपाय किये, पर वह मेड़के बाँधनेमें किसी प्रकार भी सफलमनोरथ न हो सका। इस पर [illegible] होकर वह टूटी हुई मेड़में सोगया। जब बहुत देर बीत जाने पर वह न आया, तब गुरुजी [illegible] गए, और अपने शिष्यकी यह दशा देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर यह आशीर्वाद दिया कि तुम बिना परिश्रम आप ही आप विद्या प्राप्त हो जायगी।

हे बालको! तुमको भी प्राचीन कालके शिष्योंके समान गुरुभक्त होना चाहिये इसीसे तुम्हारा कल्याण होगा, और तुम गुरुकी कृपासे यशस्वी और विद्वान् हो जाओगे।

पाठ ११.

युरुपखण्डके निवासियोंकी भारतमें पैठ।

(ऐतिहासिक भाग-२)

राज्यशासक = राज्याधिकारी। आवागमन = आना जाना। सम्पत्तिमान् = धनवान्।

पहिले पहल युरुपखंडके निवासी भारतमें राज्य करनेकी इच्छासे नहीं, परन्तु व्यापार करनेकी इच्छासे आये थे। इसलिये समुद्रके तटपर जहां निवास करने लायक जगह देखी, वहांके राज्यशासकसे आज्ञा लेकर वहीं बसगये। और वहीं अपना गोदाम अथवा कारखाना खोललिया और वहांके अधिकारीको कुछ वार्षिक कर देने लगे।

इस प्रकार सबसे पहिली बस्ती सन १५१० ईस्वीमें पोर्तगालवालोंने गोवा शहरमें बसाई। यह नगर पश्चिमी तटपर बम्बईके दक्षिणमें एक द्वीप है! फिर धीरे धीरे इन्होने कई बस्तियां गुजरातसे लेकर कन्याकुमारी तक बसाई, और कारोमंडल किनारेपर

सेंटथोमी नामक क़िला बसाकर वहीं एक नगर बसाया जहां, कि अब मद्रास शहर बसा हुआ है। पश्चिमी घाटके देशी राजाओंसे बैर होजानेके कारण पोर्तगीजोंको बहुधा अपनी बस्तियों और मालकी रक्षाके लिये हथियार धारण करना पड़ते थे। १६ वीं सदीके अन्तमें स्पेन नरेशने पोर्तुगालपर चढ़ाई करके इनको लड़ाईमें परास्त करदिया, और इनका सम्पूर्ण देश अपने अधिकारमें कर लिया। और हिन्दुस्थानमें इनकी जो बस्तियां थीं, वे डच लोगोंके अधिकारमें आगईं। क्योंकि उस समय डच लोग नाविक विद्यामें पुरतगेजकी और और जातियोंसे श्रेष्ठ थे। और इनसे और और देशोंके लोग किराये पर जहाज लेकर व्यापार किया करते थे। इस तरह डच लोगोंके जहाज पोर्तगालकी राजधानी लिस्बनसे माल लेकर हिन्दुस्थानमें पहुंचाते थे। परन्तु सन् १५८० ईस्वीमें स्पेनके राजाका पोर्तगाल पर अधिकार हो जानेसे उसने इनका आवागमन रोक दिया। तब डच लोगोंने स्वतः हिन्दुस्थानसे अपना सम्बन्ध जोड़ लिया।

[illegible] पर मुगल [illegible] कासीमबज़ार [illegible]

किला बनाकर शहर बसाया। और १७ वीं सदीके अन्तमें पोर्तगालवालोंकी सब बस्तियां उनके हाथ लगगईं।

इन लोगोंके पीछे यहां अंग्रेज लोग आये। इन्होंने पहिले पहिल ईस्ट इंडिया नामक एक कम्पनी बनाई थी। जिसे महारानी इलिजबेथने एक सनद प्रदान की थी। जिससे इसके सिवाय और कोई अंग्रेज हिन्दुस्थानमें व्यापार नहीं कर सकता था। इसके बाद कम्पनी बहुत शीघ्र सम्पत्तिशाली होगई।

अंग्रेजोंके साथ साथ अथवा कुछ दिनोंके पश्चात् यहां फरासीसी लोग आये, यह भी व्यापारके अभिलाषी थे। इन्होंने मद्रासके १०० मील दक्षिणमें पांडुचेरी नामक नगर बसाया यहीं एक किला बनाया। फिर एक और किला चन्द्र-नगर नामक शहर कलकत्तेसे २० मील उत्तरकी ओर बनाया।

[illegible]

पाठ १२.

वायुकी शुद्धता।

(स्वच्छता-भाग २)

पिछले पाठमें लिख आये हैं:-कि वायु तीन स्वाभाविक कारणोंसे निरंतर दूषित होती रहती है। इसी प्रकार तीन स्वाभाविक कारणोंसे आप ही आप वायु सदैव शुद्ध भी होती रहती है, वे ये हैं:- (१) वायुके चलनेसे, (२) भिन्न २ वायुतत्वोंके परस्पर मिलनेसे, और (३) वृक्षोंसे।

सूर्यकी उष्णतासे वायु पतली होकर सदा चलती रहती है, इसीसे आंधी भी आती है, और गन्दी वायु एक जगह ठहरने नहीं पाती। जिस प्रकार धुआं वायुमें क्रमशः मिल जाता है, उसी प्रकार बिगड़ी हुई वायु भी स्वच्छ हवामें मिल जाती है। और ज्यों ज्यों पतली पड़ती जाती है त्यों त्यों उससे हानि भी कम होजाती है। अथवा जिस प्रकार दूधमें पानी मिलनेसे दूध ह समान हो जाता है उसी प्रकार भिन्न भिन्न वायुतत्वोंके परस्पर मिलनेसे दूषित वायु शुद्ध हो जाती है [illegible] आम ऊने [illegible] और हिमक वायु [illegible]

डते हैं,और हिंसक वायु खींचते हैं। परन्तु रातमें
के विपरीत प्राणप्रद वायु खींचकर हिंसक वायु
डते हैं, तथापि दिनको जितनी प्राणप्रद वायु देते
रात्रिमें उससे कम ग्रहण करते हैं। इससे वृक्षोंसे
णप्रद वायु ही अधिक मिलती है, जो वायुको
द्ध करती है। इसी कारण मनुष्योंको रात्रिमें
ोंके नीचे न सोना चाहिये। इनके सिवाय वायुके
द्ध होनेके कई एक कृत्रिम कारण भी यहां लिखे
ते हैं:—मकान, सडकें और गली कूचे खुली
गहोंमें बनाये जावें, जिससे कि वायुका आना
ना सरलतासे होसके। टोकनियोंमें कोयला भर-
र घरोंमें टांगनेसे भी वायु शुद्ध होती है, क्योंकि
ोयलेमें वायु शुद्ध करनेकी शक्ति है। यह शक्ति दो
हीनेसे अधिक समय तक नहीं रह सकती, इससे
दो महीनेके पश्चात् दूसरा कोयला बदलते रहना
ाहिये। अथवा उसे ही गरम करके ठंडा करलेना
चित है। सडनेवाली वस्तुओं पर सूखी मिट्टी
ालदेनेसे उनकी दुर्गन्ध मिट जाती है, और वायु
ी नहीं बिगडने पाती। पायखानोंमें तो यह मिट्टी
वश्य उपयोगमें लाने योग्य है।

बेबुझा चूना जीवान्तक वायुको खींच लेता है,
ससे वायुमें रहनेवाले अनेक विषैले कीडे मर जाते

पाठ १२.

वायुकी शुद्धता।

(स्वच्छता-भाग २)

पिछले पाठमें लिख आये हैं:-कि वायु तीन स्वाभाविक कारणोंसे निरंतर दूषित होती रहती है। इसी प्रकार तीन स्वाभाविक कारणोंसे आप ही आप वायु सदैव शुद्ध भी होती रहती है, वे ये हैं:- (१) वायुके चलनेसे, (२) भिन्न २ वायुतत्त्वोंके परस्पर मिलनेसे, और (३) वृक्षोंसे।

सूर्यकी उष्णतासे वायु पतली होकर सदा चलती रहती है, इसीसे आँधी भी आती है, और गन्दी वायु एक जगह ठहरने नहीं पाती। जिस प्रकार धुआँ वायुमें क्रमशः मिल जाता है, उसी प्रकार बिगड़ी हुई वायु भी स्वच्छ हवामें मिल जाती है। और ज्यों ज्यों पतली पड़ती जाती है त्यों त्यों उससे हानि भी कम होजाती है। अथवा जिस प्रकार दूधमें पानी मिलनेसे दूधके समान हो जाता है, उसी प्रकार भिन्न भिन्न वायुतत्त्वोंके परस्पर मिलनेसे दूषित वायु शुद्ध होजाती है. वनस्पतियें श्वास लेते समय कार्बनद [illegible] वायु [illegible] जाती है और दिनमें वायु [illegible] मिल[illegible] है परन्तु [illegible] दिनको [illegible] वायु

पाठ १२.

पुष्ट बीज।

(कृषि—भाग—२)

कर्तव्य = कार्य। उपरोक्त = पहिले कहे हुए। प्रयत्न = उपाय। उन्नति = बढ़ती। तकावी = सरकारी ऋण।

इस देशमें अच्छी उपज न होनेका मुख्य कारण केवल यही है, कि खेतोंमें पुष्ट बीज नहीं बोया जाता। किसान लोग प्रायः जैसा बीज पाते हैं, उसी प्रकार खेतोंमें बो देते हैं। इसलिये प्रत्येक किसानका मुख्य कर्तव्य यह है, कि वह प्रतिवर्ष अपने खेतोंमें मोटा और पुष्ट बीज बोनेके लिये तैयार करे। अमेरिका, जर्मनी तथा इंग्लैंड आदि देशोंमें कुछ किसान अपने खेतोंमें पुष्ट बीज ही तैय्यार किया करते हैं. और यह प्रायः उनका व्यापार ही हो गया है। उपरोक्त देशोंमें बीज तैयार करनेकी प्रायः यह रीति है:—कि खेतमें ६ अथवा १२ इञ्च पर छोड़ छोड़ कर एक एक दाना बो देते हैं। यह फिर फसल यथेष्ट वायु और धूप प्राप्त होनेसे खूब पकती है और पुष्ट होती है। फिर यही बीजके काम आती है। इस देशके किसी स्थानमें

हैं, इससे घरोंको धूनेसे पुतवाना बहुत लाभकारक है। धधकते हुए कोयलोंमें गंधक जलानेसे वायु स्वच्छ होती है, परंतु इसका धुवां खांसी पैदा करता है, इसलिये इससे बचना चाहिये। एक हजार घनफुट जगह एक छटांक गंधकसे स्वच्छ होजाती है। जिस ओरसे गन्दी वायु आवे उस ओर पानीमें रसकपूर घोलकर छिडकनेसे दूषित वायु शुद्ध होजाती है।

घरोंमें आग जलाना भी वायु शुद्ध करनेका एक उपाय है, इससे मैली वायु पतली होकर बाहर निकल जाती है, और वायुके विषैले कीडे भी मर जाते हैं। परंतु जिस घरमें हवाके आवागमनका कोई रास्ता न हो, और बहुत आदमी रहते हों, उसमें आग जलाना योग्य नहीं।

प्राचीन समयसे भारतवर्षमें हवन करनेकी जो रीति चलीआती है, उससे भी वायु शुद्ध होतीहै। इसी कारण उस समय अधिकतासे हवन और यज्ञ किये जाते थे। बगीचों और बागोंसे भी वायु निर्मल होती है। जहां तक होसके, घरोंमे दो फुटकी ऊंचाई तक डामर पोतना चाहिये। क्यों कि डामरमें भी वायु शुद्ध करनेका गुण है। प्रत्येक मनुष्यको अपने अपने घरके आस पास मैदान स्वच्छ रखना योग्य है, इससे घरोंके समीपकी वायु शुद्ध बनी रहती है।

— —

पाठ १२.

पुष्ट बीज।

(कृषि-भाग-२)

कर्तव्य = कार्य। उपरोक्त = पहिले कहे हुए। प्रयत्न = उपाय। उन्नति = बढ़ती। तकावी = सरकारी ऋण।

इस देशमें अच्छी उपज न होनेका मुख्य कारण केवल यही है, कि खेतोंमें पुष्ट बीज नहीं बोया जाता। किसान लोग प्रायः जैसा बीज पाते हैं, उसी प्रकार खेतोंमें बो देते हैं। इसलिये प्रत्येक किसानका मुख्य कर्तव्य यह है, कि वह प्रतिवर्ष अपने खेतोंमें बोने और पुष्ट बीज होनेके लिये तैयार करे। अमेरिका, जर्मनी तथा इंग्लैंड आदि देशोंमें कुछ किसान अपने खेतोंमें पुष्ट बीज ही तैयार किया करते हैं, और यह प्रायः उनका व्यापार ही हो गया है। उपरोक्त देशोंमें बीज तैयार करनेकी प्रायः यह रीति है:-कि खेतमें ६ अथवा १२ इञ्च पर गोड़ गोड़ कर एक एक दाना बोदेते हैं। यह किसी फसल यथेष्ट वायु और धूप प्राप्त होनेसे खूब पकती है, और पुष्ट होती है। फिर यही बीजके काम आता है। इस देशके किसी स्थानमें

आलू, नींबूसे बड़ा नहीं होता, परन्तु इन देशोंमें यह गोल भटेके बराबर होने लगा है। अमेरिका देशके किसानोंके परिश्रमसे सन्तरेमें पतला छिलका होने लगा है। जापानके किसान अपने प्रयत्नसे बड़े २ पेड़ोंको छोटे और छोटे छोटे पेड़ोंको बड़े कर सकतेहैं। इस समय वहां आम, इमली आदि बड़े २ वृक्ष चार चार पांच पांच सौ वर्षोंसे गमलोंमें रक्खे हुए हैं।

यदि अपने पास अच्छा बीज न हो, तो उसे दूसरे किसानोंसे बदललेना चाहिये प्रतिवर्ष खेतमें एक ही बीज बोनेसे उपज कमजोर होजाती है। इसलिये एक वर्ष जो बीज खेतमें बोया जावे, वह दूसरे वर्ष कदापि न बोना चाहिये। जो फसल अपने यहां उत्पन्न न होती हो, उसका बीज अन्य अन्य देशोंसे मँगाकर बोना उचित है। बिहार और बंगालमें नीलका बीज इलाहबाद और कानपुरसे आता है। कपास चांदा, वर्धा और बरार तथा मालवा प्रान्तमें अच्छी होती है। अब इस देशमें अमेरिका और मिसरसे भी कपासका बीज मँगाया जाता है, क्योंकि वहांकी कपास यहांकी कपाससे अच्छी होती है। प्राचीन समयमें इमली मकई और तम्बाकू दूसरे देशोंसे यहां आई थीं, इसी तरह गाजर, पियाज, आलू और चाय भी दूसरे देशोंसे यहां लाये गये हैं।

अब आसाम और हिमालयकी तराईमें इतनी अधिकतासे चाय उत्पन्न होने लगी है, कि यहांसे करोड़ों रुपयोंकी चाय विदेशको भेजी जाती है। थोड़े दिन हुए; कि, अमेरिकासे गिनी घास मँगाकर इस देशमें बोई जाने लगी है, और उसकी अच्छी उन्नति हुई है।

बहुधा लोग कहा करते हैं, कि जिस चीजके लिये जिस देशका जलवायु उपयोगी है, वह फसल उस स्थानके सिवाय अन्यत्र अच्छी नहीं होती, पर यह उनकी भूल है। देखो, आलु अब फर्रुखाबाद और सागरकी उपजाऊ हलकी भूमिमें अधिकतासे होता है, मूंगफलीकी खेतीकी उन्नतिभी अब उस देशमें बहुत कीजानेलगी है। इस देशके नागपुर, पूसा, काशीपुर आदि अनेक स्थानोंमें सरकारी भूमिमें नई २ चीजें मंगाकर सरकार बोया करती है, जिसे देखकर किसान लोग भी उसी प्रकार अपने २ खेतोंमें नई २ फसलें बोकर उचित लाभ उठावें। छत्तीसगढ़के लभानदहि नामक स्थानमें भी सरकारकी ओरसे ऐसी ही सरकारी भूमि है जिसमें खेतीके नये २ प्रयोग किये जाते हैं। इस विषयकी उचित शिक्षा देनेके लिये सरकारकी ओरसे प्रत्येक प्रदेशों, जिलों और तहसीलोंमें प्रतिवर्ष कृषिप्रदर्शनी की जाती है। बाड़ी लेनेमें अच्छा बीज नहीं मिलता

और अधिक बाढी भी देनी पडती है । इसलि
किसानोंको चाहिये, कि बाढी न लेकर अच्छा बीज
मोललेवें । साहूकारोंसे रुपया अधिक व्याज प
मिलता है, इसलिये सरकारी खजानेसे तकावी लें
जहां प्रति रुपया, वार्षिक एक आना व्याज दे
पडताहै ।

युरुप तथा अमेरिकामें कृषिकी शिक्षाके लिये ब
२ विद्यालय हैं । इस देशकी भूमि अधिक उपजा
और उर्वरा है. परन्तु अच्छे बीज तथा उचित प
श्रमके बिना उससे अच्छी फसल नहीं होती, उन दे
शोंमें जितनी जमीनमें १०० मन अनाज उत्पन्न हो
ता है, यहां उतनीही भूमिमें १० मन भी नहीं होत
परिश्रमसे सब कुछ हो सक्ता है, इसलिये तुम्हें अच्
फसलके लिये अपने खेतोंमें सदा मोटा और अच
बीज बोना चाहिये ।

पाठ १४.

नीतिसंग्रह (कविता)

दोहा।

निस्पेही = जिसको किसी प्रकारकी इच्छा न हो
सुरनाह = देवताओंका राजा, इंद्र ।
उदर = पेट आगम = अवाई

जोय = देखो
उमहैगहै = दौडकरपकडे
रुधिर = रक्त
पयोधर = स्तन
कांजी = खट्टामांड
कुवैन = अनुचित शब्द
गूढ़ = गुप्तबात
पतन = गिरना
भानु = सूर्य
अभिराम = प्रिय
भाखी = कहनेवाला
वायस = कौआ
पिक = कोयल
मिस = बहाना
पलास = छेवला
गंभीर = गहरा, सहनशील
आहि = सर्प
निरन्तर = सदा

जिहि जासों मतलब नहीं, ताकी ताहि न चाह।
ज्यों निस्नेही जीवके, तृण समान सुरनाह॥ १॥
एक उदर बाही समय, उपज न इकसी होय।
जैसे कांटे बेरके, बांके सीधे जोय॥ २॥
दोषहिको उमहै गहै, गुन न गहै खल लोक।
पिवै रुधिर पय ना पिवै, लगी पयोधर जोंक॥ ३॥
सुधरी बिगरै वेग ही, बिगरी फिर सुधरै न।
दूध फटै कांजी परै, सो फिर दूध बनै न॥ ४॥
बिन स्वारथ कैसे सहै, कौन कहै कुवैन।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन॥ ५॥
मूड़ तहांही मानिये जहां न पण्डित होय।
दीपककी रविके उदय, बात न पूछे कोय॥ ६॥

खलजनसों कहिये नहीं, गूढ़ कबहुं करि मेल ।
यों फैले जग माहिं ज्यों, जल पर बूंदक तेल ॥ ७ ॥
जो पावे अति उच्चपद, ताको पतन निदान ।
ज्यों तपि तपि मध्याह्नलों, अस्त होतहिं भान ॥ ८ ॥
जो जाके हितकी कहै, सो ताके अभिराम ।
पिय आगम भाषी भलो, वायस पिक किहिकाम ॥ ९ ॥
मिथ्याभाषी सांचहूं, कहै न मानै कोय ।
भांड पुकारे पीर बस, मिस समुझै सब कोय ॥ १० ॥
चाहिं बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ ।
ज्यों पलाश संग पानके, पहुँचै राजा हाथ ॥ ११ ॥
बुद्धिमान गंभीरको, संगत लागते नाहिं ।
ज्यों चन्दन ढिग अहिरहत, विष न होत तिहिमाहिं १२
सुजन बचावत कष्टसे, रहै निरन्तर साथ ।
नयन सहाई पलक ज्यों, देह सहाई हाथ ॥ १३ ॥

पाठ १५.

वायु, भाफ और मेह ।

दृष्टिगोचर = आंखों से सम्मय । भूतल = पृथ्वीकी सतह ।

पृथ्वीके चारों ओर वायुमण्डल है । यद्यपि वायु हमें दृष्टिगोचर नहीं होता, पर जब वह बड़ा करती

है,तब हमें उसका अनुभव होता है।जिस समय आंधी आती है, उस समय हमें वायुका पूर्ण महत्त्वदीखप-डता है,क्यों कि उससे बडेरवृक्ष उखड जातेहैं । और मकानोंके छप्पड भी उडजाते हैं । धरातलकी अपेक्षा समुद्रमें वायुका प्रभाव अत्यन्त भयानक होता है, क्योंकि इससे समुद्रकी लहरें अत्यन्त ऊंची उठती हैं जिससे बहुधा बडे २ दृढ जहाज टुकडे २ होजाते हैं।

वायु पृथ्वीमें जल, थल, उच्चसे उच्च पर्वत और नीचेसे भी नीची घाटी, कूप, बावली तथा बडेसे बडे गड्ढों तकमें हैं। अनुमान कियाजाता है कि वायु धरातलसे२० मीलकी ऊंचाई तक है । वायुमें 'वजन भी है, इससे इसकी नीचेकी तहें ऊपरकी तहोंसे दबे रहनेके कारण घनी तथा भारी होती हैं । जिस प्रकार जलमें तैरते समय हमै जलका दबाव नहीं जान पडता, उसी प्रकार वायुका दबाव भी हमें मालूम नहीं होता । हवाका दबाव,समुद्रकी सतह पर प्रत्येक वर्ग इंचपर ७½ सेरके लगभग है । इसीसे हम यह भी निश्चय कर सक्ते हैं, कि पर्वतपरकी वायु धरातलकी वायुसे (नीचेकी तहोंके ऊपरी तहोंसे दबे रहनेके कारण) हल्की होगी । वायु कभी स्थिर नहीं रहती यहां तक कि बहुत गहरे तथा बन्द स्थानोंमें भी वह बहा करती है । बहती हुई वायुही पवन कहाती है

अब यहांपर यह शंका होती है, कि वायुके सदैव बहते रहनेका कारण क्या है ? संसारके सब विद्वान् प्रायः इस शंकाका समाधान इस प्रकार करते हैं:— सूर्य्यकी उष्णताही वायुके चलनेका कारणहै। लकड़ी अथवा कोयला जलानेपर धुआँ सीधा आकाशको चलाजाताहै, अर्थात् उष्णवायु ऊपरको उठती है, और वह अपने साथ धुएँको भी ऊपर लेजाती है। जलती हुई आगपर हाथ रखनेसे उष्णवायु ऊपर चढ़ती हुई जानपड़ती है, क्योंकि उष्णताके कारण वायुके कण फैलजाते हैं, जिससे वह चारों ओरकी वायुसे हल्की होजाती है। और यह सिद्धही है, कि हल्की वस्तु सदैव ऊपर उठती है। यदि एक लकड़ीका टुकड़ा और पत्थर पानीमें डाल देवें, तो लकड़ीका टुकड़ा हल्का होनेके कारण पानीमें तैरता रहेगा, और पत्थर डूब जावेगा।

सूर्यभी अग्निके समान उष्णताका भण्डार है। इसके कारणही समस्त पृथ्वी मण्डलकी वायु उष्ण होजाती है। विषुवत रेखाके समीपी देशोंमें सूर्यकी किरणें सीधी पड़ती हैं, इससे वहां अधिक उष्णता होती है। मई और जून महीनोंमें सूर्य सदैव शिर-पर रहता है, इसी कारण मध्यभारत अथवा सम्पूर्ण भारतवर्ष अत्यन्त गर्म होजाता है।

पृथ्वीके नक्शेमें देखो, कि सूर्यकी किरणें मई और जूनमें जिन २ देशोंमें सीधी पडती हैं, इनमें "एशि" याका दक्षिणीय भाग, तथा आफ्रिकाका अधिकांश भाग है।

मईसे सितम्बर मासतक इन स्थानोंकी वायु उष्णताके कारण ऊपरको उठती है, और उसके स्थानमें समुद्रकी ओरसे ठंडी हवा आती रहती है, इसीसे यह "नैर्ऋतीय मौसिम वायु" कही जाती है, क्यों कि इस समय यह नैर्ऋत्य दिशा हीसे वहाकरती है!

शीतकालमें भारतवर्षमें सूर्यकी किरणें तिरछी पड़ती हैं, और विषुवत् रेखाका दक्षिणीय विभाग अधिक तपता है. इस कारण वायु भारतवर्षसे दक्षिणकी ओर बहनेलगती है, जिसे "ईशान वायु" कहतेहैं।

अटलांटिक तथा पासिफिक महासागरोंके मध्य भागोंमें, तथा दक्षिण हिमसागरमें (जहां पृथ्वी और पानी बराबर २ नहीं है) वायु, वर्षभर उत्तर और दक्षिणसे उष्ण विभागोंकी ओर अर्थात् विषुवत रेखाकी ओर बहा करती है. इसे "व्यापारी वायु" कहते है. क्योंकि इससे व्यापारी जहाजोंको विशेष लाभ होता है। इससे सिद्ध होता है.कि जिस प्रकार

कुछ देरके पश्चात् जब वहांसे चला तो रुपयोंकी एक थैली वहां भूलगया। जब कुछ दूर निकलगया तो उसे वह थैली यादपडी, तब वह उसी समय बागकी ओर लौटा।

मार्गमें उसे तेरह चौदह वर्षका एक लडका मिला। लडकेने उसे घबराया हुआ देखकर पूछा– "क्या आपकी कोई वस्तु गुमगई है?" बशीरमुहम्मदने कहा–"हां, मेरी रुपयोंकी थैली खोगई है।" लडकेने उसकी थैली उसे देकर कहा–"देखिए, यही तो नहीं है?" काबुलीने कहा–"हां, यही है" और वहीं बैठकर रुपये गिननेलगा। जब रुपये पूरे निकले तो अचंभेमें होकर उसने कहा–"तुमको इतने रुपयोंका कुछ भी लालच न हुआ?" लडकेने कहा– "बालकपनहीसे मुझे यह शिक्षा दी गई है, कि पराये मालको ढेलेके समान मानो" लडकेकी यह बात सुनकर काबुली बहुत प्रसन्न हुआ और दिलमें कहने लगा–"ऐसा अच्छा लडका पाकर मां बापको न जाने कितनी खुशी [illegible] होगी?"

काबुली उस लड[illegible]को पांच रुपये देने लगा, लडकेने कहा–"मैंने तो [illegible] पाने लायक कोई काम नहीं किया। आपकी वस्तु आपहीको देदी. यह तो मुझे करना ही चाहिये था।" काबुलीने इस

बातको एक अँगरेजी समाचारपत्रमें छपवा दिया। उसमें इतना और भी लिखा था, कि "यह रुपये मेरे न थे, मेरे मालिकके थे। अगर लड़का रुपया दबाबैठता, तो मुझे जेलखाने जाना पड़ता। लड़केने जो भलाई मेरे साथ की है, उसे मैं लिख नहीं सकता। उम्रभर उसकी नेकी न भूलूंगा। उम्रभर परमात्मासे उसके लिये यही अर्ज किया करूंगा, कि यह लड़का कभी तकलीफ न उठावे।" उस लड़केका नाम वीरेश्वर मुकर्जी था, और यह जिला स्कूल बांकुड़ेके एन्ट्रेंस क्लासमें पढ़ता था।

इसी प्रकार शहर लखनऊमें एक निर्लोभ गरीब ब्राह्मणका लड़का एक बजाजकी दूकानपर नौकर था। एक दिन एक ग्राहक कपड़ा मोल लेने आया। तब उस बालकने उसका उचित मूल्य बता दिया। ग्राहकने चुपकेसे दाम निकालकर उसके सामने रख दिया। लड़का जब कपड़ेकी तह लगाने लगा, तो देखा कि कपड़ा एक जगह फटा हुआ है। तब उसने ग्राहकसे कहा—"भाई! देखलो कपड़ा यहां जरा फटा हुआहै। मैं तुमको बताये देताहूं। पीछेसे यह न कहना कि लड़केने [illegible] दिया। तब ग्राहकने कपड़ा वापस करके अपना दाम फेर लिया। यह सुनकर दुकानदार अप्रसन्न [illegible] हुआ, और

उसने उसके पितासे उसकी बडी निन्दा की। यह सुनकर उस बालकके पिताने कहाः—"कि आप क्षमा करें। अब यदि आप पांच क्या पचास भी दें, तो भी मैं इस लडकेको आपके यहां न रखूंगा। बेईमानीकी रोटी खानेसे भूखों मरना अच्छा है।" यह कह और अपने लडकेको साथ ले अपने घरकी राह ली.

हे बालको! तुम लोगोंकोभी इन दोनों बालकोंका अनुकरण करना उचित है।

पाठ १८.

मद्रास, कलकत्ता और बम्बई।

(ऐतिहासिक पाठ—१)

सन् १६१२ ईस्वीमें अंग्रेजलोग पहिले पहिल सूरत नगरमें आकर बसे क्योंकि यह नगर सुदूरखंडके व्यापारियोंके लिये विशेष सुभीतेका स्थान था: और यहींसे हिन्दुस्थानके मुसलमान हाजी मक्के मदीनेको जहाजोंसे जाते थे।

सन १६१५ ईस्वीमें इंग्लिस्तानके बादशाहने एक राजदूत हिन्दुस्थानके बादशाह जहांगीरसे और उनसे अंग्रेजोंके लिये यहां व्यापार करनेकी आज्ञा मांगी। सन् १६६४ ईस्वीमें जब मरहट्ठोंने इस नगर पर चढ़ाई की. तब अंग्रेजोंने अपने द्रव्य तथा जानकी रक्षाके

लिये युद्ध करना पड़ा।ऐसा ही हाल इनकी सब बस्तियोंमें हुआ, और इन्हें हथियार बांधना तथा किले आदि बनाना पड़ा।इसका पूरा २ विवरण कलकत्ता, बम्बई, और मदरासके आरम्भिक इतिहाससे जाना जासकेगा।

सन १६३९ ईस्वीमें अंग्रेजोंने कारोमंडल किनारे पर सेंटजार्ज नामक एक किला बनाया, और उसीके आश्रयमें मद्रास शहर भी बड़ी धमाया यह नगर युद्धके लिये सुभीतेके स्थानमें है। क्यों कि इसके एक ओर कौम नदी बहती है, और दूसरी ओर समुद्र लहरारहा है और समीप ही सेंट जार्ज नामी दृढ़ किला है। यह नगर समुद्रके किनारे २ छः मील लम्बा और एक मील चौड़ा बसा हुआ है। इस समय इसकी मनुष्यसंख्या १५०००० है। जिस स्थान पर यह नगर बसाहुआ है, यह स्थान अंग्रेजोंने १२०० पैगोडा अर्थात् सुवर्णके सिक्के देकर मोल लिया था। और कुछ वार्षिक लगान भी देते थे। जब कर्नाटकके नव्वाबने इस राजाका देश छीनलिया तब यह स्थान उसीको लगान देनेलगे।

हिन्दुस्थानके सरनाम इस समय [illegible] सबमें [illegible] तथा है [illegible] व [illegible] राने सीमान्त प्रदेश बादशाहके समयसे इस प्रदेशमें

हुगली नदीके तटपर कलकत्तेसे २५ मील उत्तरको हुगली नामक शहर बसाया। परन्तु शाहजहां बादशाहसे विरोध होजानेके कारण उसने इन लोगोंको वहांसे निकालकर हुगली शहर अपने अधीन करलिया। सन १६४० ईस्वीमें इसी बादशाहने ईस्टइंडिया कम्पनीको हुगलीमें अपना कारखाना खोलनेकी आज्ञा दी। लेकिन जब मुगलवंशका महान प्रतापी बादशाह औरंगजेब सिंहासन पर बैठा, तब उसने अंग्रेजोंसे जिजिया मांगी। तब उन्होंने यह महसूल देना स्वीकार न किया, और हुगली छोडकर चले गये। कुछ दिनोंके पश्चात् जब अंग्रेजलोग लडाईके जहाज लेकर लौटे, तो बादशाहने भयभीत होकर इन्हें गोविंदपुर,सटानिटी और कालीकट नामक गांव दाले। यही तीनों गांव मिलकर अब कलकत्ता नगर बनगया है। जो हिन्दुस्थानमें सबसे बडानगर मानाजाता है।

तीसरा बडा नगर बम्बई, पहिले पोर्तगीजोंके अधीन एक छोटासा गांव था। सन १६६१ ईस्वीमें पोर्तगालके राजाने यह नगर अपने दामाद इंग्लैंड नरेशको दहेजमें देदिया। बम्बई नगर टापूपर बसाहुआ है। और इसके और हिन्दुस्थानके बीच समुद्र इतना तंग है कि दूसमें दिखाई नहीं पडता।

यहांपर अंग्रेजोंके पड़ोसी मरहटे थे । जिनने पोर्तगीजोंकी सब बस्तियां छीन ली थीं और इन्हें भी बड़ा कष्ट देते थे, तो भी वे इन्हें बम्बईसे न निकालसके ।

ये तीनों नगर कलकत्ता, बम्बई और मद्रास दो कारणोंसे समुद्रके तटपर अथवा इसके अत्यन्त समीप बसायेगये । क्योंकि यहां अंग्रेजोंके जहाज सरलतासे आसक्ते थे । दूसरे, संकटके समय अपना माल असबाब जहाजोंमें भरकर यह लोग बिना कठिनताके अपने देशको लौट सक्ते थे । जबतक यह दुर्बल रहे, तबतक समुद्रके तटपर बसने ही में इन्होंने अपना कल्याण समझा । पर बलवान् होनेपर इन्होंने सारे हिन्दुस्थानपर अधिकार जमालिया ।

पाठ १९.

नींद ।

([illegible]—भाग २)

प्राणियोंके अपने जीवनकी रक्षाके लिये नींदकी बड़ी आवश्यकता है । प्राचीन समयमें प्राणदण्डके अपराधियोंको इसलिए सोने न देते थे, जिससे कि वे बिना मारे ही मर जायँ ।

दिनभर काम करनेसे शरीर और मन दोनों थक-

जाते हैं। जिस प्रकार हमारे शरीरकी बलकी कमी भोजनसे पूरी होती है; उसी प्रकार नींद आनेसे भोजन भी भली भांति पचता है। जब किसी कुएंसे दिनभर पानी निकाला जाता है तो उसका पानी कुछ उतर जाता है। पर रातको ज्योंकात्यों भर जाता है। इसी तरह रातको वह सोनेसे हमारे शरीरकी कमी पूरी होजाती है। निरोगी और बलवान रहनेके लिये हमें अवश्य सोना चाहिये, परन्तु अधिक सोनेसे भी बहुतेरे रोग उत्पन्न होजाते हैं।

युवा मनुष्योंकी अपेक्षा बालकोंको अधिक सोना लाभकारी है, बारहवर्षके बालकको प्रतिदिन कमसे कम ९ घंटे और तरुण मनुष्यको ७ घंटे सोना चाहिये। रोगीको अधिक नींद आना निरोग होनेका लक्षण है, रोगसे चङ्गे होनेपर कुछ दिनतक अधिक नींद आती है. इससे रोगीके बलकी कमी पूरी हो जाती है।

सोनेका समय १० बजे रातसे ५ बजे सवेरे तक अच्छा है। दिन निकलने तक सोनेसे शरीरकी आरोग्यता नष्ट होती है। इसी लिये लोग बहुधा यह कहावत कहा करते हैं:—कि "सवेरे सोना जीवनसे हाथ धोना है।" जो लोग जल्दी सोकर जल्दी उठते

हैं, उनका शरीर आरोग्य रहता है । और उनकी बुद्धिभी तीक्ष्ण होती है दिनको सोना अत्यन्त हानिकारक है, इससे शरीरमें सुस्ती आती है, और समय भी व्यर्थ जाता है । परन्तु भोजन करनेके पश्चात् कुछ समय तक आराम करना लाभकारक है। ग्रीष्मऋतुमें दोपहरको सोनेसे शरीर प्रफुल्लित रहा करता है ।

दिनभर काम करते रहनेसे रातको अच्छी नींद आती है । परन्तु सोनेसे पहिले अधिक भोजन करनेसे बेहोशी आ जाती है, और आमाशयको अधिक परिश्रम करना पड़ता है, जिससे अशुभ स्वप्न होते हैं । धरतीकी अपेक्षा पलँग, खाट, पियाल अथवा सूखी पत्तियोंपर सोना अच्छा है, क्योंकि जमीनपर सोनेसे सांप, बिच्छू आदिके काटनेका भय रहता है और सीड़दार धरतीमें सोनेसे शरीरमें कई प्रकारके रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

ओढ़ने बिछानेके वस्तु सदाकाल स्वच्छ रखना चाहियें क्योंकि मैले कपड़ोंका मैल, शरीरके छिद्रोंसे शरीरमें समा जाता है । सोनेका स्थान विशेषकर हवादार हो, और उसमें ऐसी जगह आग अथवा दिया न जलाना चाहिये, जहांसे धुआं भलीभांति न निकलने पावे । मुंह ढांककर सोनेमें स्वच्छ हवा नहीं मिलती । ग्रीष्मऋतुके सिवाय

मैदानमें न सोना चाहिये। जहां आंधी या हवा वेगसे बहरही हो, वहां सोनेसे शरीरकी उष्णता निकल जाती है, इससे बहुधा बीमारी हो जाया करती है। जब महामारी या ज्वरका प्रकोप अधिकतासे हो, तो रात्रिको शरीर गर्म रखना चाहिये।

पाठ २०.

वृक्षोंका खाद्य।

(कृषि-[illegible]--२)

नियम १-"वृक्षोंका खाद्य जमीनमें परिपूर्ण रहे।" जिस प्रकार मनुष्य अपने मुंहसे भोजन और पानी खा पीकर जीवित रहते, और पुष्ट होते हैं, इसी प्रकार वृक्ष, जमीनकी मिट्टीरूपी वस्तुओंका रस जड़ोंसे और वायु ग्रहण करके उसका अंश पत्तोंसे पीकर रहते हैं। यदि कोई झाड़ इस प्रकार रोक दियाजावे कि उसे वायु न मिलसके, तो वह बहुत शीघ्र सूख जावेगा। परन्तु खाद्य और पानी न मिलनेसे वह [illegible] कुछ समय तक जीवित रहेगा। इससे निश्चय है, कि वृक्षका मुख्य आहार वायु है। परन्तु वृक्षोंको वायु [illegible] ही [illegible] मिलाकरता है, इसी कारण [illegible] [illegible] नहीं सूखते। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मिलता है इसी कारण [illegible]

फसल पतली और कम होने लगती है, इसलिये उत्तम फसल होनेके लिये खेतोंमें खाद देनेकी अत्यन्त आवश्यकता है। अन्यान्य देशोंकी अपेक्षा इस देशमें खात अत्यन्त सरलतासे तैयार होसक्ता है, गोबर, कूड़ा तथा मूत्र आदिका खात अत्यन्त उपयोगी होता है, मूत्र धरतीमें सोखकर कुओं और तालाबोंमें झिरोंके द्वारा जा पहुंचता है, इसलिये खारी मिट्टी और खारे पानीको भी खादके समान खेतोंमें डालना चाहिये। मूत्रका खार असाढ़के पहिले पानीके साथ खेतोंमें बहजाता है, इसलिये गंवरसा खेतोंमें अच्छी फसल होती है। हरीफसलके खाद बनानेकी यह रीति है कि, अम्बाड़ी अथवा चरींदाकी फसल खेतोंमें बोकरके कुछ बड़ी होनेपर भादोंमें जोत डालो, और पन्द्रह दिन तक सड़जाने पर उसे मिट्टीमें दबादो, जिसमें उसे कुओंरका पानी मिलजावे। यह खात, उन्हारीकी फसलके लिये लाभकारी है, क्यों कि बटरा, अम्बाड़ी आदि लम्बी फलीकी फसल हवासे खाद खींचती है, और मिट्टीमें मिलजानेपर जमीनकी कमी पूरी करदेती है। पक्षियोंकी बीटका खात भी लाभदायक होता है इसी कारण युक्तप्रान्तके किसान चिड़ियाकी बीटका खात चार रुपया मनके भावमें अर्वांकासे लाकर अपने खेतोंमें डालते हैं। चीन

और जापान देशमें मैलेके खादका बड़ा आदर है। यद्यपि भारतवर्षमें इसे अशुद्ध मानते हैं, तो भी फर्रुखाबाद, कानपुर और पूनामें इससे सहस्रों रुपयोंकी वार्षिक आय होती है, मध्यप्रदेशमें नागपुर जबलपुर आदि नगरोंमें भी इस खादका प्रचार होने लगा है, और क्रमशः इस देशमें इसके खादका उपयोग अब दिनोंदिन बढ़ता ही जाता है। इसके बनानेकी यह रीति है:-कि जमीनमें एक २ फुटके अन्तर पर खाइयां खोदीजावें; और उनमें मैला भरकर मिट्टीसे पूरदेना चाहिये। जिसमें उसकी हवा और दुर्गन्धि न निकलसके, छह महीनेमें मैला और मिट्टी एकरस होजानेपर उत्तम खाद बन जावेगा, परन्तु इस खादके खेतको पानीकी बड़ी आवश्यकता होती है। हड्डियोंका खाद तो इस देशमें कहीं भी नहीं बनता। हड्डियोंको देगोंमें डालकर चूर्ण करना चाहिये, फिर उनकी देगोंमें कई घंटों तक पानी छिड़कनेसे हड्डियोंका चूर्ण अत्यन्त नर्म होजाता है, जो खेतोंमें डालनेसे बहुत [illegible] मिट्टीमें मिल जाता है परन्तु महंगा पड़नेके कारण इस देशमें इसे नहीं बनाते।

जब तक खाद मिट्टीमें मिलकर एकरस न होजावे तब तक उससे पौधोंको लाभ न पहुंचेगा। [illegible] महंगा [illegible] [illegible] मिट्टीमें [illegible]

मिलनेके कारण फसलको जलादेता है। हरी फस-लका खात भी धरतीमें अच्छी तरह मिलजाने पर दूसरी फसलको दूसरे वर्ष लाभ पहुँचाता है। गोबरका खात गेहूंकी फसलके लिये लाभकारक है। आलू, मकई, तम्बाकू, गन्ना और जौकी फसलमें मैलेका खात डालना चाहिये। तम्बाकूके खेतोंमें खारे पानीसे सींचना उपयोगी है। मकई, जौ और गेहूंके खेतोंमें हड्डियोंके खातकी आवश्यकता है। उपजाऊ धरतीमें हड्डीके खातकी और पुराने खेतमें गोबर, मूत्र, हरी फसल और खारे पानीका खात गुणदायक होता है। जिस खेतमें जिस खातकी आवश्यकता हो उसमें वही खात डालना उचित है। यदि किसी खेतमें खात डालनेसे भी उत्तम फसल न हो, तो यह मानना चाहिये:-कि उस खेतको उस खातकी आवश्यकता नहीं है।

पाठ २१.

व्यावहारिक उपदेश, (कविता)

शब्दार्थ।

सर्वस्व. (सर्वस्व) = सब कुछ। प्रणपाला = प्रतिज्ञा पालनवाला [illegible] = [illegible] [illegible] = विनाश विरुद्ध = उलटा। [illegible] = एक [illegible]

वृक्ष। बयार = हवा। पंगु = लँगड़ा। पराय = भागकर। दीठि = दृष्टि, नजर। फजिहतावार = अपमान, निरादर।

मान पुत्र दोऊ बडे, युग चारहु परमान।
सो नरेश दशरथ तजे, वचन न दीन्हें जान॥
वचन न दीन्हें जान, बडनकी यही बडाई।
बानी कही सो होइ, और सर्वस कि न जाई॥
कह गिरधर कविराय, भये दशरथ प्रणवाना।
वचन कहे नहि तजे, तजे निज सुत अरु प्राना १॥
नारि अतिबलक भये, कुलकर होत विनाश।
कौरव पाण्डव वंशको, कियो द्रौपदी नाश॥
कियो द्रौपदी नाश, केकई दशरथ मारे।
रामचन्द्रसे पुत्र, तऊ बनवास सिधारे॥
कह गिरधर कविराय, सदा नर रहइ दुखारी।
सो घर सत्यानाश, जहां है अतिबल नारी॥ २॥
भौंरा ये दिन कठिन हैं, दुख जानि लहो शरीर।
जबलगि फूलहि केतकी, तबलगि बिलम करीर॥
तब लगि बिलम करीर, भूलि मन दुःख न कीजै।
जैसी चलै बयार, पीठि पुनि तैसी दीजै॥
कह गिरधर कविराय, अरे मन समझे भौंरा।
सहहि दुःख अरु सुक्ख, एक सज्जन अरु भौंरा॥ ३॥
साई इन पाला परा, आनमान ने आय।
पंगु अंधको छोड़के, दुरजन बैठे राज्य॥

पुरजन चले पराय, अंध इक मतो विचारो ।
धारै पंगाको पीठि, डीठि वाको पग धारो ॥
कह गिरधर कविराय, मते सों चलियो भाई ।
बिना मतेको राम, गयो रावणकी साईं ॥ ४ ॥
साईं नदी समुद्रमें, मिली बड़प्पन जान ।
जातिनाश भइ मिलतही, मान महत की हान ॥
मान महतकी हान, कहो अब कैसी कीजै ।
जल खारी ह्वै गयो कहो अब कैसे पीजै ॥
कह गिरधर कविराय, कच्छ मच्छन सकुचाई ।
बड़ो फजिहताचार, भयो नदियनको साईं ॥ ५ ॥

पाठ २२.

रानी दुर्गावती ।

महिलाएँ = स्त्रियां । प्रतिष्ठित = सन्मानित । अकस्मात् = अचानक ।

भारतवर्षमें जो गौरववान तथा यशस्विनी अनेक महिलाएं हुई है, इनमें रानी दुर्गावती परम प्रसिद्ध मानीजाती है । भारतके उत्तरीय प्रान्तमें चन्देल श्रेणी क्षत्रियोंमें अत्यन्त कुलीन मानेजाते हैं । इनके पिता भी चन्देलवंशी क्षत्रिय महोबेके राजा थे । यह राज्य उस समय उत्तरीय भारतके रजवाड़ोंमें अत्यन्त प्रतिष्ठित माना जाता था । तौभी इस समय

इस राज्यके अधिकारमें कुछ निर्बलता आगयी थी। इस समय जबलपुरके समीपी गढ़ामण्डलेका राजा दलपतिसाह बलवान और पराक्रमी मानाजाता था, अपनी प्रतिष्ठाकी वृद्धिके विचारसे इसने महोबेके चन्देल राजासे इससे ब्याह करनेकी इच्छा प्रगट की। यद्यपि राजपूत लोग ऐसा ब्याह योग्य न मानते थे, क्योंकि ऐसा ब्याह हिन्दुधर्म्मशास्त्रके विरुद्ध मानाजाता है। तथापि इसके पिताने दलपति-साहसे अपनी रक्षाका वचन लेकर इसका ब्याह इसके साथ करदिया। भाग्यदोषसे दलपतिसाह थोड़े समयमें ही मृत्युको प्राप्त होगया, और दुर्गावती राज्यासन-पर विराजमान हुई।

गोंडराज्यकी दिनोंदिन वृद्धि होती हुई देखकर मुगल सम्राट् अकबरका इसपर ईर्षा होगया, इस लिए इसने सन १५६४ ईस्वीमें बड़ा भारी सेना सहित आसफखांको गढ़मण्डले पर चढ़ाई करनेका आदेश दिया। इस समय रानी दुर्गावती बहुतसी सेना और [illegible] लेकर युद्ध करनेको [illegible]

[illegible]

नहीं करसके, वह कार्य विद्वान् आदमी अपनी विद्याके बलसे सहजहीमें परिपूर्ण कर डालता है। जिस समुद्रकी पर्वतके समान बड़ी २ और भयंकर लहरोंके देखनेसे हृदय कांपउठता है, जिसके गर्जन तर्जनको सुननेसे बड़े २ साहसी और धैर्यवान मनुष्य साहस छोडबैठते हैं उस समुद्रके नीचे सुरङ्ग खोदकर फरासीस जातिने इस संसारमें अपना नाम अमर कर लिया है।

फ्रांस और इंग्लैंडके बीचमें डोवरका मुहाना है, यह मुहाना उत्तर उपसागर और इंगलिश चेनलको आपसमें मिलाता है। इसी मुहानेके नीचे समुद्रमें सीसा गलाकर दो फरासीस विद्वानोंने रेलका मार्ग बनाया है, यद्यपि दो चार वे अपने कार्यमें सफल न हुए, किन्तु इसपर भी वे विचलित न हुए और अपने उद्योगमें लगेरहे। अन्तमें भगवान्ने उनका मनोरथ पूर्ण किया। सुरङ्ग रखनेके लिये उसके भीतर जो पुल बनायागयाहै, उसमें वायुके आवागमनके लिये रबरकी नलियां लगायी गयी हैं, और सुरङ्गके भीतर बिजलीकी रोशनी है। ऊपरसे समुद्रका जल उछलता है, और उसके नीचे धक धक करती हुई रेलगाडी दौड़ती है। परन्तु रेलमे बैठेहुए यात्रियोंको किसी प्रकार कष्ट नहीं होता।

भारतवर्षमें भी इसी प्रकार अनेक सुरंगे हैं: जिनमें कुछ सुरंगोंका संक्षिप्त वृत्तान्त यहां लिखाजाता हैः-छोटानागपुरके अन्तर्गत पलामू जिलेके रोहितास-गढ़में एक सुरंग है, जो अत्यन्त प्राचीन है। लोगोंका कहना है, कि सुरंगके भीतर अनेक तहखाने हैं, और उसके भीतर २ दूरतक रास्ता चलागया है। और उस सुरंगमें असंख्य द्रव्य भराहुआ है। सुरंगमें जानेका मार्ग पर्वतके ऊपर है, जिसमें नीचे जानेके लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं। एक बार एक साहब सुरंगके मार्गमें मसालें जलाकर घुसे थे, पर लौटकर नहीं आये, अब सर्कारने इस सुरंगको बन्द कर-दिया है।

मुंगेरमें भी गंगाजीके तटपर मीरकासिमकी बनवायीहुई एक सुरंग है। इस सुरंगके ऊपर २ गंगाजी बहती हैं।

बिहारप्रान्तके छपरा जिलेके मांझी गांवमें भी एक प्राचीन सुरंग है। राजपूतानाके अन्तर्गत सीकर राज्य है, उसमें फतहपुर नामक गांवमें भी एक सुरंग है। यह बड़ी लंबी चौड़ी है, और उसके ऊपर एक तालाब है।

प्रयागके किलेमें भी एक सुरंगका होना बतला-याजाता है। लोगोंका कहना है:-कि यह सुरंग

भीतरही भीतर आगरेके किलेमें जा मिली है। यह इतनी लम्बी चौडी है, कि तीन आदमी घोडेपर सवार होकर बराबर उसमें चले जा सक्ते हैं। यह सुरंग नजर बटके पाससे आरम्भ होती है, पर सुनते हैं, कि सरकारने इसे भी बन्द करवा दिया है।

बिहार प्रान्तके आरा जिलेके सहसराम नामक गांवमें भी एक विचित्र सुरंग है, इसके चारों ओर नगर है, और हवा तथा प्रकाशका भी यहां उचित प्रबन्ध है।

पाठ २४.

भगवान् रामचन्द्रका वनवास और सीताहरण।

([illegible])

सत्यनिष्ठ = सत्य में निष्ठा रखनेवाले। पूर्ण = [illegible] = [illegible] दण्डकारण्य = दण्डक नामक वन। [illegible] = निकलनेकी जगह

रामचन्द्रजीके ब्याह होनेके कुछ दिनों बाद दशरथ राजाने अपनी वृद्धावस्थाके कारण रामचन्द्रजीको युवराज बनानेका विचार किया उस समय भरत और

उद्गम स्थान "पञ्चवटी" नामक रमणीय तपोभूमिमें निवास किया। उसके अनन्तर एक दिन लंकाके राक्षसराज रावणकी बहिन शूर्पणखा रामचन्द्रजीको देखकर, मोहित होकर उनसे कु इच्छा प्रगट करने लगी, तब उसकी अत्यन्त धृष्टता देख करके लक्ष्मणने रामचन्द्रजीकी आज्ञासे उसके कान नाक काटकर बिदा करदिया। उसके अपमानको देखकर खर, दूषण और त्रिशिरा नामक उसके पराक्रमी भाइयोंने चौदह सहस्र राक्षस लेकर रामचन्द्रजीपर आक्रमण किया, तब केवल दो घड़ीमें रामचन्द्रजीने उन सबको सरलतासे मारडाला। यह समाचार सुनकर मारीचको कपटमृगका रूप धारण कराके रावण पञ्चवटीमें आया। परमसुन्दर वेषधारी, सुवर्णमय मृगरूपधारी मारीचको देखकर सीताजीने उसके चर्मकी मृगछाला बनानेकी इच्छा प्रकट की। सीताजीका अत्यन्त हठ देखकर रामचन्द्रजी उस मृगके मारनेको चले, तब वह मृग रामचन्द्रजीको छलसे बहुत दूर लेगया, अन्तमें बहुत दूर जानेपर रामचंद्रजीने उसे बाणसे मारडाला। मरनेके समय वह राक्षस, "लक्ष्मण" का नाम लेकर बड़े शब्दसे चिल्लाने लगा उस समय जानकीजीने रामचन्द्रजीको आपत्तिग्रस्त जानकर लक्ष्मणको उनके समीप भेज दिया, इसी

बहुत दिनोंतक लड़ाइयां होती रहीं। परन्तु फरासीसियोंका राज्य यहांसे उखड़ गया, और अंग्रेज सम्पूर्ण भारतवर्षके स्वामी होगये।

यद्यपि फरासीसी भी अंग्रेजोंके बराबर शूरवीर हैं, और उनका देश फ्रान्स, अंग्रेजोंके देशसे बड़ा है और १७ वीं सदीमें उनका युरुपखंडका राज्य, और सेना अंग्रेजोंसे बढ़कर थी, इसपर भी उनका प्रभाव हिन्दुस्थानसे विनष्ट हो गया, और अंग्रेजोंका राज्य दृढ़ होगया, उसके मुख्य दो कारण ये हैं:-(१) फरासीसियोंके बादशाहने उनको पूरी २ सहायता न दी, क्यों कि, उस समय वह युरुपखंडके राज्य जीतनेमें लगा था। और अंग्रेजोंको अपने देशसे बराबर सहायता मिलती रही। (२) उस समय फरासीसियोंमें डूप्लेके सिवाय कोई बड़ा चतुर सर्दार न था। जैसे अंग्रेजोंमें लार्ड क्लैव, वारनहेस्टिंग्स आदि चतुर होगये हैं।

१८ वीं सदीके मध्यभागमें मुगलोंकी बादशाहत नष्टभ्रष्ट होरही थी, यद्यपि औरंगजेबके मरनेके ३० वर्षके पश्चात् मुगलराज्यका विस्तार काबुलसे मद्रास तक फैलगया था, जिसका प्रबन्ध एक बादशाह के अधिकार नहीं रहसकता था। इसका फल यह हुआ कि [illegible] सूबेदार स्वतन्त्र होगये और बादशाहके लिये [illegible] नाम और इसके नाम-

पासके जिले ही रहगये। यह सब सूबेदार, बादशाहको नाममात्रको सालाना लगान दियाकरते थे।

दक्षिणीय हिन्दुस्थानमें निजाम हैदराबाद और नव्वाब कर्नाटक यह दो सूबेदार थे। इनकी संतानमें जब २ गद्दीके लिये झगडे होते थे, तब २ अंग्रेजों और फरासीसियोंको एक दूसरेको सहायता देने और आपसी वैर भँजानेका पूरा अवसर मिलता था। सन १७३४ ईस्वीमें जब युरुपमें फ्रांस और इंग्लिस्तानके बीच युद्ध आरम्भ हुआ, तब हिन्दुस्थानमें भी इन दोनों देशोंके निवासी आपसमें लडनेलगे। अंग्रेजोंने पांडुचेरीका किला जीत लिया, पर फरासीसियोंके कहनेसे अर्काटके नव्वाबने उनको समझा दिया इससे अंग्रेज चुप होगये। परन्तु जब फरासीसियोंने मद्रास पर चढाई करके उसे जीत लिया, तब अर्काटके नव्वाबने दस सहस्र सेना अंग्रेजोंकी सहायताको भेजी पर फरासीसियोंने उनको मार भगाया। इसी समय युरुपखंडमें इन दोनों जातियोंमें मेल होजानेसे यहां भी इन दोनोंमें संधि होगयी। और मद्रास अंग्रेजोंको फिर लौटा दियागया।

सन १७४८ ईस्वीमें हैदराबाद और कर्नाटकके सूबेदारोंके परलोकवासी होनेपर उनकी संतानों

पाठ २६.

घरोंकी स्वच्छता।

(स्वच्छता—भाग—४)

परिमाण = क्षेत्रफल। कीटाणु = कीड़ोंके छोटे २ अंश अर्थात् अंडे। पीकदान = थूकनेका बर्तन।

प्रत्येक मनुष्यका निर्वाह विना घरके नहीं हो सक्ता, इससे सबसे अधिक ध्यान इनकी स्वच्छतापर ही देना चाहिये। पहिले पहिल घर बनानेकी जगहपर ही विचार करना योग्य है, जहांतक हो सके घर ऊंची जगहमें बनाया जावे, जहां की चारों ओरसे विना रोकटोक वायु आनेका सुभीता हो। डाबरझील और दलदल धरतीके पास बनाना हानिकारक है, सीड़दार भूमि भी घर बनाने योग्य नहीं होती। घरकी कुर्सी इतनी ऊंची होना चाहिये जिसमें बरसातके पानीके भरनेका भय न रहे और सीड भी न आने पावे। तंग और टेढी गलियोंमें घर न बनाना चाहिये।

छत और छप्पर ढालू बनाना उचित है.. क्यों कि इससे बरसातका पानी सहज ही वह जाया करताहै। घरका द्वार इतना बड़ा और ऊंचा हो, जिससे वायुका आना जाना सुगमतासे होसके। घरके प्रत्येक भागमें

पायखाना रहनेकी जगहसे दूर पक्का, स्वच्छ और हवादार हो, और उनकी मोरी भी पक्की रहे। पायखानोंमें फर्शपर धूल और मिट्टी पुरी हो। पायखाना फिरनेके पश्चात् उनपर मिट्टी डालदेनेसे उसके कीटाणु बाहर नहीं फैलसकेंगे, और पायखाना प्रतिदिन स्वच्छ कियाजावे।

घरमें पशुओंके बांधनेके लिये अलग स्थान बनायी जाय, और उनकी लीद, गोबर, पेशाब आदि घरसे बाहर फेंकदिये जावें, क्यों कि इनके सड़नेसे वायु बिगड़जाती है।

मकानके चारों ओर खूब घने मकान रहनेसे वायुके आवागमनमें रुकावट होती है।

पाठ २७.
वृक्षोंका लाभ।

[illegible]

खेत इतना अधिक सुखजाता है, कि इसमें अंकुर भी भलीभांति नहीं निकलता। झकड़ा जड़वाली फसलोंके लिए अधिक जुताईकी आवश्यकता है, क्यों कि मूसला जड़वाले झाड़ तो अपना खाद जमीनमें दूरसे भी खींचलेते हैं, पर झकड़ा जड़वाले झाड़ोंकी जड़ें जमीनमें दूरतक नहीं जातीं, इसलिये ये अपना खाद गहरी जमीनसे नहीं खींचसक्ते।

नियम-६ "धरतीमें इतना पानी अवश्य रहे, जिससे खाद भलीभांति घुलजावे।"

यदि धरतीमें पानी न रहे, तो खाद कभी घुल नहीं सक्ता और खादके घुले बिना वह किसी प्रकार भी इसे खींच नहीं सक्ते, क्यों कि पानी खादको घोलकर इसके भीतर झाड़तक पहुंचाता है। इसदेशमें प्रायः प्रतिवर्ष पूरा पानी बरसता है परंतु वह नई धरतीमें टिकने नहीं पाता [illegible] इसकी मिट्टी कठोर होनेके कारण और [illegible] बहुतसा पानी व्यर्थ ही बहजाता है और [illegible] [illegible] बहजाता है [illegible] [illegible]

समान नीचेकी सीड़ सोखलिया करती है, जोकि धूपके साम्हने आनेमे भाफ बनकर उड़ जाती है। ठीक समयपर जोतने बोने और बखरनेसे धरतीमें पूरा पानी बना रहता है, यह समय वर्षमें अधिक दिनोंतक नहीं रहसक्ता, क्योंकि जोतनेका समय पानी गिरनेसे और बोनेका समय धरती सुखनेसे मिलना कठिन है। अनुभवी कृषकोंको यह बात अच्छी तरह मालूम रहती है।

खेतोंमें बँधान बाँधनेसे उनका पानी व्यर्थ नहीं बह सक्ता। यद्यपि बँधान बांधनेमें अधिक खर्च पड़ता है, तौ भी वह खेतकी उपजहीसे निकल आता है, क्योंकिः-(१) सबंध खेत दुफसली होते हैं। (२) उनसे मिट्टीरूपी खाद नहीं बहसक्ता, और उनमें खात डालनेसे विशेष लाभ होता है। (३) खेतको अधिक जोतना, बखरना नहीं पड़ता। (४) फसलका खाद पानीमेंसे आ जाता है। (५) खेतमें घास पात नहीं उग सक्ता। (६) खेतको कुआंरके पानीकी आवश्यकता नहीं रहती। बँधान सब स्थानोंमें उपयोगी नहीं होते नालोंके पास बँधान बांधनेमें उनका पानी जल्दी सुखजाताहै बांदा, भंडारा और म[illegible] जिलोंमें धानके खेत तालाबोंसे सींचजाते हैं। आगरा और अवधके

संयुक्त प्रदेश और पंजाबमें उन्हारीकी फसल कुओंसे सींचीजाती है, मध्य प्रदेशमें केवल गन्ने आदिके छोटे २ खेत और बगीचोंको सिंचाईकी आवश्यकता होती है, क्यों कि यहांकी काली मिट्टीके अधिकांश खेतोंको कुओंकी सिंचाईसे कुछ लाभ नहीं होसक्ता।

पाठ २८.

नीति (कविता)।

शुक = शुक्राचार्य। समरथ (समर्थ) = शक्तिमान्। धर्मसेतु = धर्मकी सीमा। लांघत हैं = नांघते हैं (या) पारजाते हैं। महँ = में, भीतर। अबार = विलम्ब (या) देर। मूढता = मूर्खता (या) हठ। जलधि = समुद्र। सोहीं = हैं। पंकज = कमल। मकरंद = केशर (या) पराग। वृंद = समूह (या) ढेर। प्रकट्यो = प्रगट-हुआ है।

चौपाई

तब शुक बोले गिरा सुहाई।
समरथको नहिं लागत राई।
धर्मसेतु लाँघत हैं सोई।
तेजस्वी महँ दोष न होई॥
जिमि सब वस्तु अग्नि महँ जाई।

जरतहु कछु न अपार लगाई ।
कर्म समर्पनके लखि लीजै ।
मनहुं तें पर तस न करीजै ॥२॥
यदपि मूढ़ता धरि मन कोई ।
करै नाश पावै तदै सोई ।
जलधि जात विष करै जु पाना ।
विना रुद्र नाशै निज प्राना ॥३॥
सांचे वचन समर्थन केरे ।
पर न आचरण सत्य घनेरे ।
विगत विरोध वचन तिन केरे ।
धरित युक्ति बुद्धिके प्रेरे ॥ ४ ॥
बुधजन तिनहीको मन आनी ।
कराहिं आचरण अति सनमानी ।
अनहंकारि समर्थ जो होवै ।
कुशल चरित महँ स्वार्थ न जोवै ॥ ५ ॥
करत अशुभ हू नाहिं डराहीं ।
तदपि न अनरथ तिन जगमाहीं ।
तो किमि पाप पुण्य लग ताही ।
सकल जगत ईश्वर जो आही ॥ ६ ॥
पशु पक्षी अरु नर मुनि देवा ।
सदा कराहिं तिनकी सब सेवा ।
जाके पदपंकज मकरंदा ।

आपने ही स्वतः अपने पतिको परित्याग करके जलमें प्रवेश किया था । देवव्रतने अपने पिता तथा माताकी रक्षामें सम्पूर्ण वेद, शास्त्र, और धनुर्वेदका भलीभांति अभ्यास किया था ।

एक समय आखेटप्रिय शान्तनु नरेशने गंगा नदीके तटपर विचरण करते समय मत्स्यराजकी परम रूपवती कन्या मत्स्यगन्धाको देखकरके उससे ब्याह करनेकी अभिलाषा प्रकट की, परंतु उसके पिताने स्वार्थके वशीभूत होकरके इस प्रतिज्ञापर अपनी लड़की देना स्वीकार किया:—"कि यदि आप इसके पुत्रको अपना भावी राज्याधिकारी मानें, तो मैं अपनी इस कन्याको आपको प्रदान करूं।" महाराज शान्तनुने अपने ज्येष्ठ पुत्र भीष्मदेवको राज्याधिकारके अधिकारसे वंचित करना न चाहा, यद्यपि उस कन्याके पाणिग्रहण न कर सकनेसे उनके मनमें अत्यन्त कष्ट हुआ । पिताके इस खेदका समाचार जब देवव्रतने सुना, तब अत्यन्त शीघ्रतासे अपने पिताके मन्त्री आदि राजकर्मचारियोंको लेकर मत्स्यराजके समीप जाकर यह अत्यन्त कठिन वचन बोले:—"तुम अपनी कन्या मेरे पिताको प्रदान करो । निःसन्देह इसके पुत्र राज्याधिकारी होंगे । तुम निश्चय जानो कि मैं अपने पिताके कल्याणके

पाठ ३०.

वायु, भाफ और मेह।

(विवरण २. भाफ और मेह)

विस्तृत = फैलाहुआ। सारांश = मतलब। परिवर्तन = अदलबदल।

इस विषयके प्रथम विवरणमें तुम्हें यह मालूम हो गया है—कि वायु मंडल पृथ्वीके चारों ओर है, और जो लगभग पृथ्वीसे ५० मीलकी ऊंचाई तक विस्तृत है। वायुमें पवन भी है, और वह सूर्यकी उष्णताके कारण चलती है। चलती हुई वायुको पवन कहते हैं। सूर्यकी उष्णताके कारण उसके परमाणु फैलते हैं, और हलके होकर ऊपर उठते हैं, तब उनके स्थानमें ठंडी और घनी वायु आजाती है। विषुवत रेखाके समीपकी वायु अधिक उष्ण होती रहती है, इसी कारण सदैव भारतवर्षमें मौसमी वायु चला करती है, अब इस पाठमें भाफ और मेहका विवरण लिखा जावेगा।

स्वच्छताके पाठमें कहदिया है, कि वायुतत्त्वके दो प्रकार है—(१) प्राणप्रद और (२) ओशान्तक, इनके सिवाय वायुमें भाफ भी रहती है। धोबी गीले कपड़ोंको वायुमें लटका देता है, तो वे शीघ्र

दी गुम जाते हैं। बड़े २ तालाब अथवा छोटे २ सरोवर, जो बरसातमें पूर्णरीतिसे भरजाते हैं, ग्रीष्मकालमें अवश्यही सूखजाते हैं। बरसातके दिनोंमें जो धरती गीली होजाती है, वह बरसातके पश्चात् सूखजाती है। जब पानी गरम किया जाता है, तब प्रत्यक्ष दीख पड़ता है, कि वह भाफ बनकर ऊपरको आता जाता है, इसी प्रकार सूर्यकी उष्णताके कारण तलावों और सरोवरोंका जल भी भाफ बनकर हवामें मिलजाता है। और गीली धरतीका जल भी भाफ बनकर वायुमें मिलजाता है इसी कारण वह सूखजाती है। वायु चाहे कितनी भी उष्ण क्यों न हो, पर उसमें पानीकी भाफ अवश्य मिली रहती है, यदि हम उसे देख नहीं सके। हमारे मुँहसे श्वासके साथ जो पानीकी भाफ निकलती है, उसमें पानीकी भाफ रहती है। क्योंकि यदि हम किसी स्लेट पर मुँहसे भाफ दें तो पानीके छोटे २ कण स्लेट पर दीख पडते हैं। इससे वायुमें पानीकी भाफका रहना भलीभांति सिद्ध होजाता है। जिस प्रकार उष्णताके कारण पानी, भाफरूप होजाता है, उसी प्रकार ठंडसे भाफका पानी बन जाता है। जब भा[illegible] पृथ्वीके समीप इकट्ठित दिखाई देती है तब उस [illegible] कहते हैं। और जब वह वायुमें कुछ ऊपर इकट्ठा दीख पड़ता है, तब उसे

"मेघ" या "बादल" कहते हैं। शीत ऋतुमें तालावो और नदियों पर कुहरा दिखाई पडता है। बादल और कुहरेमें केवल इतनाही अन्तर है:-कि बादल वायुमें अधिक ऊँचाई पर बनते हैं। जब दो या अधिक बादल एकत्रित होते हैं, और भाफके सूक्ष्म कण एक दूसरेसे मिलकर भारी होजाते हैं, तब वे मेह बनकर बरसने लगते हैं। मेघोंको ध्यानपूर्वक देखनेसे यह मालूम होता है, कि वे सदा अपना स्वरूप पलटते रहते हैं, क्योंकि जब भाफके सूक्ष्म कण कभी घने और कभी विरल होतेरहते हैं।

स्वच्छ रात्रिमें जब पृथिवीकी धरातल, शीघ्र ठन्डी होजाती है, तो भाफके कण पृथ्वीकी सतहके समीप जमजाते, और वृक्षोंके पत्तों और घास पर ओसके स्वरूपमें गिरने लगते हैं, अगर ठन्डकी अधिकतासे ओस जमजाती है, तो तुषार गिरनेलगता है, जब भाफके सूक्ष्म कण ऊपर वायुमें जमजाते हैं, तो बर्फ गिरनेलगती है। बर्फ भारतवर्षके मैदानोंमें नहीं गिरती, परन्तु हिमालय पर्वत तथा ठंढे देशोंमें गिरा करती है और यदि भारतवर्षके मैदानोंके ऊपरकी वायुमें बर्फ जमजाती है तो पृथ्वी-तक आनेसे मेह बनजाता है, फागुन चैतमें नदी-नोंमें भाफ कभी २ ओलोंके स्वरूपमें दीख पडती

है। जब पानी ऊपरी वायुमें जमजाता है, तब ओले बनजाते हैं। सारांश यह है:-कि वायुमें जो भाफ रहती है, उसीमें कुहरा, ओस, तुषार, मेह, बर्फ और ओले बनते हैं।

पहले समझ चुके हैं, कि सूर्यकी उष्णतासे पानीकी भाफ बनती है, और यह भाफ सदैव वायुमें रहती है। यह कभी २ तो दीख नहीं पड़ती, और कभी २ बादलोंके स्वरूपमें दीख पड़ती है। यद्यपि सम्पूर्ण संसारमें वायु बनती रहती है, पर विशेषकर उन स्थानोंमें जहां सूर्यकी उष्णता विशेष रहती है, और गीलापन अधिक रहता है विशेषतः महासागर होसे बहुत सी पानीकी भाफ बनती है। यहभी लिखचुके हैं:-कि बैशाख, जेठ (मई और जून) के महीनोंमें नैर्ऋत्यसे मौसमी वायु भारतमें आती है, यही कारण है:-कि वह बहुतसी भाफ अपने साथ ले आती है, और उष्ण वायु, जो सर्वदा भारतके मैदानोंसे हलकी होकर ऊपरको उठा करती है, इस भाफको अपने साथ उड़ा लेजाती है। जो कण ऊँचे उड़ जाते है, वे ऊपरकी वायुमें पहुंचने पर घने हो जाते हैं। उच्च स्थानो पर अधिक ठण्डी वायु मिलती है। उष्ण वायु ऊपरी स्थानोमें जानेसे अधिक ठण्डी होजाती है। इसलिये जब यह भाफसे परिपूर्ण वायु

भारतमें छाजाती है, तो वह ठण्डी होजाती है। और ठण्डसे भाफ सिमटकर मेह बनकर गिरने लगती है। इसी कारण वर्षा ऋतुमें भारतमें जल बरसता है, क्योंकि नैर्ऋत्यसे बहनेवाली नैर्ऋतीय वायु, बहुतसी पानीकी भाफ हिन्द महासागरसे लाती है। और वही घनी होकर भारत पर उडती फिरती है, और वही हिमालय पर्वतके कारण उस पार न जाकर यहां मेह होकर बरसने लगती है। जब मौसमी वायुका परिवर्तन होजाता है, तब पानीका बरसना बंद होजाता है। अर्थात नैर्ऋतीय वायु ही भारतमें वर्षा होनेका प्रधान कारण है।

पाठ ३१.

लङ्कापर आक्रमण।

(भगवान् रामचन्द्र भाग-३.)

सन्देह = भ्रम। आश्रम = निवासस्थान। कुशल-तापूर्वक = आनन्दसहित। भस्मीभूत करदिया = जलादिया। सन्धि = मेल।

मारीचको वध करके आश्रमको लौटते हुए राम-चन्द्रजीने मार्गमें लक्ष्मणजीको अपने समीप आते देख करके अत्यन्त शोकित होकर वचन कहा:— 'हे लक्ष्मण! तुम किस कारणसे सीताजीको आश्रममें

अकेली छोड़कर मेरे समीप चले आये ? अब मुझे सीताके आश्रममें कुशलता पूर्वक रहनेमें सन्देह होता है ।" इतना कहकर आश्रममें आकर सीताको न देखकर रामचन्द्रजीने उनके वियोगमें अत्यन्त विलाप किया, और फिर पञ्चवटीको परित्याग करके दक्षिण दिशाकी ओर सीताको ढूँढ़ते हुए चले । मार्गमें जटायुसे इंगितके द्वारा कुछ समाचार पाकर और उसका अन्तिम संस्कार करके रामचन्द्रजी किष्किन्धाके समीप पम्पा सरोवरमें आये । वहां शबरी नामक एक भीलनीने उनसे सुग्रीवके साथ मैत्री करनेका अनुरोध किया, जो अपने ज्येष्ठ भ्राता वालिके भयसे छिपकरके ऋष्यमूक पर्वतमें निवास करता था, और जिसकी स्त्री आदि सम्पूर्ण सम्पत्ति उसने अपहरण करली थी । इसके पश्चात् ऋष्यमूक पर्वतमें हनुमानकी सहायतासे रामचन्द्रजीकी और सुग्रीवकी परस्पर सहायता करनेके प्रयोजनसे मित्रता हुई, फिर रामचन्द्रजीने वालिको छलसे बध करके सुग्रीवको किष्किंधापुरीका राजा बनाया, और वालिके पुत्र अंगदको "युवराज" पदमें अभिषिक्त किया, वानरोंके राज्यकी प्रधानता पाकर सुग्रीवने सीताकी खोजके लिये सम्पूर्ण दिशाओंमें अनेक वानर भेजे, जिनमें हनुमान नामक अत्यन्त पराक्रमी वानरने

रामचन्द्रजीने वानर और भालुओंकी महान सेनाके साहित समुद्रको पार करके लंकापुरीके समीप डेरा डाला, और रावणके समीप संधि करनेकी अभिलाषासे अंगदको भेजा। लंका नगरीमें जाकर अङ्गदने रावणको अनेक प्रकारसे समझाया जिससे आपसमें विरोध न बढ़े। परन्तु रावणने उसकी संमति किसी प्रकार न मानी तब अङ्गदने रामचन्द्रजीके समीप आकर रावणकी अभिमानपूर्ण धारणाका भली प्रकार वर्णन किया, इसपर अत्यन्त कोपित होकर रामचन्द्रजीने लंकापुरी पर चढाई करके उस नगरको चारों ओरसे घेर लिया।

पाठ ३२.

वङ्गाल।

(ऐतिहासिक पाठ भाग-५)

वार्षिक = सालाना। अत्याचार = अन्याय। प्रभावशाली = बलवान। दुर्बल = बलहीन।

हिन्दके अन्य २ सूबोंके सूबेदारोंके समान उस समय बंगाल बिहार और उड़ीसेका सूबेदार भी नाममात्रको दिल्लीके अधीन था।और थोड़ासा वार्षिक कर भी बादशाहको दिया करता था। सन १७५६ ईस्वीमें अलीवर्दीखांके मरनेपर उसका पोता सिरा-

उद्दौला बङ्गालका सूबेदार हुला। वह बुद्धिरहित तथा दुष्ट था। इस कारण उससे प्रजा भी सन्तुष्ट न थी। उसने अपने मनमें लोगोंके बहकानेसे यह ठान लिया था:-कि अंग्रेज लोग मुझे गद्दीसे उतारना चाहते हैं। इसलिये वह एक बड़ी सेना लेकर कलकत्ते पर चढ़गया। और वहांका किला जीतलिया। उस समय अपने पर विपत्ति आई हुई जानकर बहुतेरे अङ्गरेज तो भागगये. पर जो १४६ अंग्रेज शेष रह गये। वे "ब्लैकहोल" नामक तंग कोठरीमें कैद कर दिये गये, जिनमेंसे प्रातःकाल केवल २३ आदमी अधमरे निकले। जब इस अत्याचारका संदेसा मद्रास पहुंचा, तो वहांके अंग्रेजोंने इसका बदला लेनेके लिये जंगी जहाजोंका बेडा और कुछ सेना कलकत्तेको भेजी। तब सिराजुद्दौला वहांसे भागगया। और प्लासीके मैदानमें सेना इकट्ठी की। कलकत्ता लेलेनेके पीछे क्लैवने सन १७५७ ईस्वीमें प्लासीमें सिराजुद्दौलाको हराया। और मीरजाफरको बंगालका नव्वाब बनाया। हिंदुस्थानके इतिहासमें प्लासीकी लड़ाई इसलिये प्रसिद्ध है:-क्योंकि इसीमे बंगालमें और अन्तमें संपूर्ण हिन्दुस्थानमें ईस्ट इण्डिया कंपनीके राज्यकी जड़ जमगयी।

ईस्वीमें पानीपतकी तीसरी प्रसिद्ध लड़ाई हुई, जिसमें दुर्रानियोंने मरहटोंको परास्त किया। नादिरशाहके मरनेपर अहमदशाह दुर्रानीने अफगानिस्तान जीतकर हिंदुस्थान पर चढ़ाई की। और दिल्ली जीतकर वहांके मुगल बादशाहको निकालदिया। तब बादशाहने मरहटोंकी सहायतासे फिर दिल्लीका तख्त ले लिया। लेकिन अहमदशाहने उसे मारडाला। मरहटोंके सरदार हुल्कर, सेंधिया, गायकवाड़ और पेशवा पानीपतमें अफगानोंसे लड़े। इस भयसे-कि कहीं अफगानोंका राज्य भारतमें न फैलजावे। पर सन १७६१ ईस्वीमें पानीपतके मैदानमें उनकी बड़ी हार हुई। इससे अंग्रेजोंको यह लाभ हुआः-कि उनके शत्रु मरहटे दुर्बल होगये। क्लैवकी गैरहाजिरीमें बंगालमें मीर जाफरने गड़बड़ मचाया। इससे वह गद्दीसे उतार दिया गया और उसका दामाद मीर-कासिम नव्वाब बनाया गया। इसने भी अंग्रेजोंसे शत्रुता की. और एक भारी सेना एकत्रित करके पटना नगर ले लिया। और कैदी अंग्रेजोंको मार-डाला। तब सन १७६४ ईस्वीमें अंग्रेजोंने उसे और उसके मित्र अवधके नव्वाबको बक्सरके मैदानमें

बहुधा कीचड होजाता है, इसलिये उनमें कंकड और पत्थर बिछाकर मिट्टी पूरदेना लाभकारी होताहै। खुले चौक और बगीचे बड़े उपयोगी होते हैं। कसाई चमार और रंगरेज बस्तीसे बाहर बसायेजावें। जानवरोंकी लोथें गांवके बाहर कमसे कम २०० गजकी दूरीपर गाडी जावें। अच्छी बात है:-कि इस देशमें जानवरोंकी लाशें चमार खा जाते हैं। मुर्दोंकी गाडने और जलानेकी जगह भी बस्तीसे बहुत दूर हो।

बस्तीमें खडहरोंमें झाडा फिरने और कूडा कचरा फेंकनेसे आरोग्यतामें बड़ी बाधा पहुँचती है। गांवोंमें लोग तालावोंके पारमें अथवा गावोंके समीप दिशा बैठ जाते हैं, और कूडा कचरा फेंक दिया करते हैं, यह बहुत हानिकारक है। क्योंकि मैला सूखनेपर उसके कण वायुमें मिलकर बीमारीकी उत्पत्तिके कारण हो जाते हैं, इससे बस्तीमें कमसे कम २०० गजकी दूरीपर हद बांधना चाहिये. जिससे लोग गांवके समीप दिशा न बैठसकें, और नगरोंमें पायखाने हवादार और स्वच्छ रहें।

नदियोंमें जिस घाटमें पीनेको पानी लियाजाता है, उसके नीचे नहानेकी और कपडे धोने, पशुओंके नहवान आदि निस्तारके घाट बनाना चाहिये।

नदियोंके किनारे अथवा सूखे भागमें पायखाना फिरना योग्य नहीं होता और कूडा करकट तथा मैली कुचैली वस्तुएँ नदियोंमें फेंकनेसे उनका जल दूषित होजाता है। तालावोंमें नहाने धोने, दतोन करने, पायखाना फिरनेके पश्चात् पानी लेने, सुअर और ढोरोंके लोटने और पकनेके लिये अम्बाडी या सन डाल देनेसे जल बिगड़ जाता है। इसलिये जहांतक होसके वस्तीमें कमसे कम दो तालाब होना चाहिये, एक निस्तारके लिये और दूसरा पानी पीनेके लिये। नदियों और तालावोंके समीप कुएँ खोदलेनेसे उपयोगी जल मिलसकता है,क्योंकि वह झिरनेसे छनकर स्वच्छ होजाता है। कुओंपर पनघटे अवश्य बनाना चाहिये। उनके आसपासकी धरती ढालू रक्खी जावे,जिससे मैला पानी बहजाया करे। उनका मुँह बन्द रहे। जिससे घास, फूस और पेडोंके पत्ते न गिरसकें, और बहुधा छोटे २ बच्चोंके गिरनेका भय भी मिट जावे। पानी खींचनेकी रस्सी और बर्तन स्वच्छ रक्खे जावें। कुओंको प्रतिवर्ष उगारना चाहिये, इससे कुओंमें स्वच्छ और नवीन जल लानेवाले झिरे खुल जाते हैं कुएँ गहरे खोदने चाहिये, और उनके समीपकी धरतीमें मैलापन न रहनेपावे, क्योंकि इससे उनमें दुर्गन्धि समाजाती है।

पाठ ३४.

कृषि-रक्षण ।

(कृषि—भाग-५.)

जिस प्रकार खेतमें अच्छी उपज होनेके लिये अच्छा बीज बोने और पूरा खाद तथा पानी देनेकी आवश्यकता है, उसी प्रकार उसके भीतरके घासपात आदि नींदनेकी भी बड़ी ही आवश्यकता है। यदि खेतका घासपात न नींदा जायेगा तो वह खेतके खादके अंशको अपनी रक्षाके लिये खींचलेगा, क्यों कि फसल और घासपात, दोनोंका खाद समान है। बहुतसे घासपात हाथहीसे निंदजाते हैं, परन्तु कोई २ अत्यन्त कठिनतासे उखाड़े जासकते हैं। घास बहुत शीघ्र खेतभरमें फैलजाता है, परन्तु लगातार जोतने और बखरनेसे उसका अंकुर सूखजाता है। इसकी जड़ें धरतीमें दो तीन फुट तक गहरी चली जाती हैं, इसलिये इसके खोदनेमें बहुत समय और व्यय लगता है। और परिश्रम भी बहुत पड़ता है। अगिया गर्मीमें जल्दी उगता है, और उसका घास जल्दी कुम्हलाता है इसलिये वे पत्ते झड़जाते हैं। खेतमें अच्छा खाद डालनेसे अगिया दूसरे साल नहीं रहता।

जहाँतक होसके निंदाई बहुत शीघ्र की जावे। छरा बोनेमें हाथकी निंदाईमें अधिक व्यय पड़जाता है, इस लिये बीज पांत धरके बोना चाहिये, जिससे पांतोंके बीच दँतरी मारनेसे घास पात उखड़ जावे. इस देशमें कपास और ज्वारके खेतोंमें दँतरी चलाते हैं, यह रीति बहुत उपयोगी है।

हवा और धूप भलीभांति न मिलनेके कारण घनी फसल भली प्रकार नहीं बढ़सक्ती, इसलिये खेतमें बिरली फसल बोना लाभकारी है अथवा बीचके झाड भी घासपातके समय उखाड दिये जावें। अगर उपजाऊ खेतमें उत्तम चुनाहुआ बीज सबका सब ऊगे, तो प्रति एकड़ ५० सेरके परिवर्तनमें १० सेर बीज लगे। बँधिया खेतोंमें पानी भरे रहनेके कारण घासपात नहीं उगता। छरेंकी अपेक्षा रोपेकी बिरली फसलमें धान उत्तम और अधिक होता है, इसके सिवाय बीजभी छरेंकी अपेक्षा पांचवां भाग लगताहै।

रायपुर और बिलासपुर जिलेमें धानकी छरेंकी फसलको जोतकर बिरली करदेते हैं, इससे बीजकी यद्यपि अत्यन्त हानि होती है. तथापि धरतीके पोली होजानेसे फसल पुष्ट होजाती है. इस रीतिको ब्यासी कहते हैं। इस देशमें बहुधा रोपा नहीं लगाते, क्योंकि एकही किसानके जितने खेत रहते हैं,वे दूसरे

दोंदमें मचान बनाते हैं, और खेतके आसपास पटकना और टापर आदि बांधते हैं। इन्हें रखवाला मचानपर बैठकर रस्सियोंसे हिलाया करता और पशुपक्षियोंको भगाया करता है।

पाठ ३५.

नीति (कविता)।

नर-मूढ़ = मन्दमति। राग = गायन। धनी = मालिक। लघुताई = छुटाई। पद्माकर = एक कवि। साहिबी = मालिकी। कुंवर = कुमार। कुवराई = युवराजकी पदवी। बच = बचन। बालिबधू = बालिकी स्त्री तारा। जौं = अगर।

सवैया।

ज्ञान घटै नर मूढ़की संगति,
ध्यान घटै बिन धीरज आये।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

राग वही जामें राम बसें,
अरु ध्यान वही जो धनीके धरे को।
प्रीति वही जो सदा निबहे अरु,
प्रेम वही जिमि दाग जरे को ॥
काहेको आदम सोचत है अब,
नाहिन है कोउ दुःख परे को।
संततिमें तो करोर मिलें पर,
मित्र वही जो बिपत्ति परे को ॥ २ ॥
मोहि न सोच इतो तन मान को,
मायें रहें कि लहे लघुताई।
यहू न सोच पनो पद्माकर,
साहिबी जोपै मुकंदहि पाई ॥
सोच यही इक बालि बधे पर,
देहिगो अंगदको युवराई।
यों बच बालिबधूके सुने,
करुनाकरको करुना भरि आई ॥ ३ ॥

पाठ ३६.

एक ईमानदार फकीरकी

कहानी।

मुआफ = क्षमा। शायद = कदाचित। ला ार = आशारहित। आराम = विश्राम।

शहर बुखारामें आईन नदीके तटपर एक फकीर निवास करता था। उसने एक दिन देखा, कि एक सेब उस नदीमें बहा चला जारहा है. यह सोचकर, कि अन्तमें यह सेब सड़जायगा, और किसीके काम न आवेगा. निकालकर खा लिया। फिर वह खानेके पश्चात् बहुत पछताया, और मनमें कहने लगाः—कि, हे खुदा! न जाने यह सेब किसका था। मैंने बहुत अनुचित किया, कि जो इसके मालिकके बिना पूछे इसे खा लिया, मैं खुदाको क्या मुँह दिखाऊंगा, ! जबतक इसका मालिक मुझे मुआफ न करेगा, मुझे किसी प्रकार भी चैन न आवेगा। यह सोचकर वह मालिककी खोजमें नदीके किनारे २ उस ओरको चला, जिधरसे सेब बहकर आया था। चलते २ नदीके किनारे एक बाग देखा. जिसके एक पेड़की डालियां पानीमें लटक रही थीं। यह पेड़ सेबका था। यह देखकर उसने दिलमें कहा, कि होन हो, यह सेब इसी पेड़का है। तब वह बागके अन्दर जाकर मालीसे कहने लगा "भाई! तुम्हारे बिना पूछे मैंने एक सेब खा लिया है इसलिये मुझे मुआफ कर दो" मालीने कहा- यह बाग मेरा नहीं है। मैं तो यह भी नहीं जानता कि यह बाग है किसका! हां इतना जानता हूं, कि इस बागका

दारोगा एक दूसरे बागमें रहता है । तुम उसके समीप जाओ, शायद उससे मालिकका पता चलजावे ।" यह सुनकर बेचारा फ़क़ीर दारोगाके पास गया, और उससे सारा हाल सुनाया । दारोगाने कहा:-"इस बागका मालिक बलखमें रहता है, वही मुआफ करसक्ता है ।"

इतना सुनकर फ़क़ीरकी जान सूखगई । परन्तु मालिकका पता लगानेकी इच्छासे बलखकी राह ली और नाना प्रकारकी तकलीफें झेलकर वह मालिकके पास जा पहुंचा । वहां पहुंचकर उससे सारा हाल कहकर मुआफी चाही । उसने कहा-"भाई ! अभी मैं इस बागका मालिक नहीं हूं । दामकी बातचीत होरही है, परन्तु अभी ते नहीं हुआ । असली मालिक किरमानमें रहता है ।"

तब फ़क़ीर लाचार होकर किरमानकी तरफ चला । किरमान बहुत बड़ा शहर था । वहां के आनेवालेसे किसीका पता लगाना कुछ सहल न था । वह बेचारा दरवाजे २ जाता, और पूछता, कि क्यों भाई ! बुखारामें आईन नदीके किनारे किसका बाग है ? लोग पागल मानकर उसकी बात हँसीमें उड़ाते । मगर वह अपना काम कब छोड़नेवाला था । लोगोंसे पूछता ही रहा । आखिर मालिकका पता

लगही गया। उस बागका मालिक एक अमीर जौहरी था। जब उसने फकीरकी सारी बातें सुनीं, तो बडे अचंभेमें होकर कहाः—"सिर्फ इतनी ही बातके लिये आप छः महीनेसे मारे २ फिरहे हैं? यह कौनसी बडी बात है? ठहरिये, खाना खाइये, आराम कीजिये, आपका काम हो जायगा। फकीरने कहा—"खाना तो मैं जब खाऊं, कि आप मुझे मुआफ कर दीजिये।" जौहरीने कहा—"आप खाइये भी तो, मुआफी होजायगी। यह बाग मेरी बेटीका है, मेरे कहनेसे वह जरूर मुआफ कर देगी। यह सुनकर फकीर प्रसन्न हुआ, और खाना खाकर थोडी देर आराम किया।

जौहरीने फकीरको बेटीके पास लेजाकर मुआफी दिलवादी, और फकीरकी नेकी और सचाईसे ऐसा खुश हुआ, कि उस लडकीकी शादी भी उसीके साथ करदी।

पाठ ३७.

सत्यता।

धर्मोपदेशक = धर्मकी शिक्षा देनेवाले। यथेष्ट = इच्छानुसार। एकाएक = अचानक।

इस संसारमें सत्यतासे बढ़कर श्रेष्ठ गुण अन्य

देकर यह कहाः-भैया! भूलसे यह छड़ीमें लगीहुई चांदी मैं तुमको देना भूलगया था, इससे तुमलोग यह मेरा अपराध क्षमा करना। गुसाईंजीकी बात सुनकर डाकुओंके मनमें अत्यन्त प्रभाव पड़ा, और उसी समय अपना सब लूटका माल पुण्य करके वे गुसाईंजीके शिष्य होगये।

किसी समय अब्दुलकादिर ईरानी अपने बालकपनमें बहुतसे यात्रियोंके साथ बगदादको जारहे थे। चलते २ एक जंगलमें पहुंचे। उस समय दिन डूबरहा था, और बस्ती भी बहुत दूर थी। ऐसे कड़ाकेका जाड़ा पड़रहा था, कि हाथ पांव ठिठुरे जाते थे। यह लोग उस जंगलमें चले जारहे थे, कि एकाएक बहुतसे डाकू उनपर टूट पड़े, और उनका सारा माल असबाब छीन लिया। इसके पश्चात् उन्होंने अब्दुलकादिरके कपड़ोंको भी टटोला, पर उनमें कुछ भी न पाया। तब एक डाकूने उनसे पूछा-"क्या तेरे समीप कुछ नहीं है?" उसने उत्तर दिया, कि मेरी गुदड़ीमें चालीस मोहरें हैं, जो मेरी माँने चलते समय सी दी थीं। यह कहकरके उन्होंने उन मोहरोंको गुदड़ीसे निकालकर उनको दिखादिया। यह देखकर उन डाकुओंके सरदारको अत्यन्त आश्चर्य हुआ, और उसने यह कहाः-"तूने सत्य कह करके

क्यों अपनी मोहरोंका लालच न किया?" यह सुनक- रके उसने उत्तर दिया:-कि चलते समय मेरी माताने मुझसे कहा था:-कि " बेटा ! होशियार रहना और कभी असत्य भाषण न करना ।"

लड़केकी इस भोली सत्य बातने डाकुओंके सरदा- रके मनमें अत्यन्त प्रभाव डाला । उस समय उसने अपने मनमें यह विचार किया:-"कि यह बालक अपनी माताकी आज्ञामें इतना दृढ़ है, पर मैं वृद्ध होनेपर भी परमेश्वरकी आज्ञाका पालन नहीं करता ।"

सरदार इस बातसे अत्यन्त लज्जित हुआ, और पछताया । फिर उसने कादिरका हाथ पकड़कर यह कहा:-"कि मैं तेरे सन्मुख शपथ खाता हूं, कि अब कभी भगवानकी आज्ञा भंग न करूंगा ।" उसके साथ उसके सम्पूर्ण साथियोंने भी उसी दिनसे निश्चय करलिया, कि अब किसीको न सतावेंगे; और अपने सरदारसे कहा:-"कि जैसे अबतक आप हमारी बुराईमें सरदार रहे, इसी प्रकार भलाईमें भी अब तकहो सरदार रहिये ।"

फिर इन लोगोंने मुसाफिरोंका सारा माल लौटा दिया, और उस दिनसे डाका मारना छोड़दिया ।

पाठ ३८.

लौंग और इलायची।

लौंगः-पहिले यह वृक्ष मलाका देशमें उत्पन्न होता था, इसके पश्चात् इसका बीज बोर्नियो और दक्षिण अमेरिकामें बोया जाने लगा। आजकल भारतवर्षमें भी इसको यद्यपि बोने लगे हैं, तथापि यहां इसमें फल नहीं होता। यह पेड़ ऊंचा होता है, और आठ नौ वर्षका होनेपर फलने लगता है।

अंबोयना द्वीपकी लौंग उत्तम होती है, वहां एक २ पेड़में प्रतिवर्ष लाखों लौंगें लगती हैं। प्राचीन समयमें जब मलाका द्वीपमें डचलोगोंका अधिकार था, तब ये लोग लौंगका व्यापार किसी औरको न करने देते थे, और इच्छानुसार भावसे बेंचते थे।

लौंग अत्यन्त उपयोगी होती है, इसका तेल निकालाजाता है, और सर्दी होनेपर यह बहुधा भूनकर अथवा वैसी ही खायीजाती है। पूर्वकालमें यह पांच अथवा छः आनेमें एक तोला बिकती थी, पर अब एक आनेमें पांच छः तोले बिकती है।

इलायचीः—यह बहुधा भरतखण्ड और इनके आसपासके उष्णदेशोंमें उत्पन्न होती है, परन्तु शीतदेशोंमें यह कदापि नहीं होसकती। मलेबार, कोचीन, मंगलूर और कर्नाटकमें इलायचीकी उपज

यद्यपि पहिलेपहिल कम्पनीके नौकर इस देशमें व्यापार करनेके लिये आये थे। परन्तु जब उन्होंने व्यापारकी रक्षा और वृद्धिके लिये कलकत्ता, बम्बई और मद्रास नगर बसाये, तो प्रत्येक नगरमें प्रबन्धके लिये एक २ गवर्नर और कौंसिल रखनी पडी। परन्तु बंगाल, प्लासी और बक्सरकी लडाईके पश्चात् जब कम्पनीका राज्य बहुत दूरतक फैलगया, वौ उसने सन १७७२ ईस्वीमें वारन हेस्टिंग्जको बंगालका गवर्नर जनरल नियत करके भेजा। और उसे मद्रास और बंबईके गवर्नरों पर अधिकार दिया। गवर्नर जनरलकी सलाह और सहायताके लिये कलकत्तेमें एक कौंसिल भी नियत की गई। वारन हेस्टिंग्ज एक प्रसिद्ध पुरुष था, और वह हिन्दुस्तानका बहुतकुछ हाल जानता था। सन १८५०ईस्वीमें वह ईस्ट इंडिया कम्पनीकी नौकरीमें भरती हुआ था, और बंगाल और मद्रास, दोनों जगह नौकरी कर चुका था। उसने अपने समयमें निम्नलिखित प्रबन्ध किये:-

(१) सुप्रीमकोर्ट अर्थात् बडी न्याय-सभा नियत की। और उसे प्रदेशकी सम्पूर्ण अदालतोंपर देखरेख करनेका अधिकार मिला। इसके जज अर्थात् न्यायाधीश विलायतसे नियत होकर

कानेसे। देशी न्यायसभा अब हाईकोर्ट, चीफकोर्ट
और जुडिशल कमिश्नरोंके नामसे भारतके प्रत्येक
प्रान्तमें हैं।

(२) वारन हेस्टिंग्सने जमींदारोंसे ठीक २
सर्कारी लगान वसूल करनेका प्रबन्ध किया, जिसमें
जमींदार लोग काश्तकारोंपर अन्याय न करसकें।
इनके समयमें राजाकी ओरसे जमींदारोंपर और
जमींदारोंकी ओरसे काश्तकारोंपर बड़ा अन्याय
होता था। और एक दूसरेपर मनमाना लगान
घटाते बढ़ाते थे।

(३) वारन हेस्टिंग्सने पहिले पहिल "माजिस्ट्रेट" और "कलेक्टर" नियत किये। जिससे सर्कारी
लगान न्यायसे वसूल हो। और जमींदारोंके
अत्याचारसे किसान बचजावें। इस प्रदेशमें
मजिस्ट्रेट और कलेक्टर "डिप्टी कमिश्नर" अर्थात्
जिलासाहब कहलाते हैं।

वारन हेस्टिंग्सके समयमें दो बड़ी लड़ाइयां हुईं,
पहिली मरहट्टोंसे और दूसरी मैसूरके हैदरअलीसे।

मुगल राजाओंके समयमें मरहट्टोंका प्रभाव दक्षिणमें बहुत बढ़गया था। उनके प्रसिद्ध राजा शिवाजीके मरनेपर उसके वंशके राजा दुर्बल होगये और
उनके मन्त्री पेशवाका प्रभाव बहुत बढ़गया। तब

राजा कैदीके समान सितारेमें और राजाके समान पेशवा पूनेमें रहने लगा। धीरे २ पेशवाओंका प्रभाव भी घटगया। उस समय मरहट्टोंके चार बडे २ सरदार थे, अर्थात् संधिया, हुल्कर, गायकवाड और भोसला। पहिले पहिल यह लोग आपसमें इस बातपर लडे, कि उनका पेशवा कौन हो ? और अंग्रेजोंकी सहायता चाही। पर पीछेसे वे सब मिलकर अंग्रेजोंसे लडे, और उन्हें पूनाके समीप हराया। परन्तु सन १७८२ ईस्वीमें वारन हेस्टिंग्जने एक सेना बंबईमें भेजी, जिसने गुजरातका बहुतसा भाग विजय करलिया। और दूसरी मध्य हिन्दुस्थानको जिसने ग्वालियरका प्रसिद्ध किला जीता।

मैसूरके पुराने हिन्दूराजाको गद्दीसे उतारकर हैदरअली स्वतः वहांका नव्वाव बनबैठा। और धीरे २ बडा बडवान होगया। और फिर मद्रास विजय करनेकी तैयारी की। परन्तु वहांके अंग्रेजोंने कुछ रुपये देकर उससे मेल करलिया। जब सन १७७२ ईस्वीमें हैदरअली परलोकको सिधारा, तो उसकी गद्दीपर टीपूसुल्तान मैसूरका नव्वाब हुआ। बारह वर्ष यहांका प्रबन्ध करनेके पश्चात् सन १७८५ ई०में वारन हेस्टिंग्ज इंग्लिस्तानको लौटगया। क्लैवके समान इसके भी दुश्मनोंने इसपर कई एक अपराध लगायः— कि इसने हिन्दुस्थानमें अनेक अत्याचार किये, और

अवधकी बेगम तथा काशी नरेशसे जबरन रुपये वसूल किये। पर अन्तमें वह न्यायालयसे निर्दोष सिद्ध हुआ। वारन हेस्टिंग्जके पीछे लार्ड साहब कार्नवालिस गवर्नर जनरल नियत हुए, उस समय अंग्रेजों और टीपू सुल्तानसे युद्ध हो रहा था। सन १७८९ ईस्वीमें टीपू सुल्तानने अंग्रेजोंके मित्र ट्रावनकोरके राजा पर चढ़ाई की। तब लार्ड साहब कार्नवालिसने हैदराबादके निजाम और पेशवासे मिलकर मैसूरपर चढ़ाई की। अन्तमें टीपूकी पराजय हुई, और उसने आधा राज्य देकर अंग्रेजोंसे संधि करली।

इसके पश्चात् निजाम और मरहटोंमें दुश्मनी बढनेपर करदलाके मैदानमें मरहटोंने उसे बिलकुल परास्त कर दिया। इससे अब केवल मरहटे ही अंग्रेजोंके प्रबल शत्रु रहगये।

सबसे प्रसिद्ध कार्य लार्डसाहब कार्नवालिसके समयका इस्तिमरारी बन्दोबस्त हुआ। जिसके द्वारा यहांकी जमीनका लगान सदाके लिये नियत होगया। पर इससे काश्तकारोंका विशेष लाभ न हुआ। केवल जमीदार ही इससे विशेष लाभमें रहे। क्योंकि जमींदार लोग उनपर अब भी लगान घटा बढा सक्ते हैं। बंगालके जमींदारोंपर जो लगान है, वह हिन्दुस्थानके अन्यान्य प्रदेशोंसे न्यून है।

पाठ ४०.

बीमारी।

(स्वच्छता-भाग)

कुपथ्य = अयोग्य भोजन। व्याधि = बीमारियाँ। प्रायः = बहुधा। विशेष = अधिक कर। लक्षण = चिह्न।

बहुतसी बीमारियाँ मैलेपनसे अथवा कुपथ्यसे उत्पन्न होती हैं। इसलिये बीमारी उत्पन्न होतेही उसके कारण जानना चाहिये, क्योंकि कोई भी बीमारी बिना किसी कारणके कदापि नहीं होसक्ती।

बहुतेरी व्याधि ठीक न भोजन करने और विश्राम करनेहीसे जातीरहती है। इसलिये जब कोई मनुष्य बीमार हो, तो वह प्रायः विश्राम करे। और इतने कपड़े ओढ़े, जिससे शरीरमें उष्णता बनीरहे। शीघ्र पचनेवाला भोजन करे। इन उपायोंसे बहुधा बीमारी दूर होजाती है।

जिस समय बीमारी फैली हो, उस समय हवा और जलकी स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना योग्य है। कभी अपने मकानके निकट मैले कूड़े न रहनेपावें, जिनके सड़नेसे वायु बिगड़नेका भय

हों उन्हें या तो बस्तीसे बाहर फिंकवाना चाहिये अथवा सूखी मिट्टीसे पूरदेना उचित है । इन दिनोंमें बहुत देरमें पचनेवाला भोजन भी न करना चाहिये । जिन तालावों और कुओंका पानी मैला होगया हो, उनका पानी बीमारीके दिनोंमें पीना अत्यन्त हानिकारक है । रोगीको छोटी कोठरीमें सुलाना योग्य नहीं, क्योंकि रोगीके श्वास लेनेसे और लोगोंके आवागमनसे वहांकी वायु बिगड़ जाती है, इसलिये बीमार आदमीके पास आवश्यकतासे अधिक मनुष्य न रहें । यदि रोगी अधिक बीमार न हो, तो कुनकुने पानीमें कपड़ा भिगोकर उसका शरीर धीरे २ पोंछडालना लाभकारी है, इससे शरीरके रन्ध्र पसीने आदिसे बन्द नहीं होनेपाते ।

खाज, दाद, फोड़े आदिकी बीमारी प्रायः शरीरके रक्त बिगड़नेसे उत्पन्न होती है, इससे इनके होनेपर स्वच्छ जलमें सबेरे ही स्नान करना लाभकारी होताहै । क्योंकि शरीरमें जो सहस्रों छोटे २ रन्ध्र हैं, वे स्नान न करनेसे बन्द होजाते हैं । तब उनमें पसीनेके द्वारा शरीरकी दूषित चीजें बाहर नहीं निकल सकतीं । शरीरके समान कपड़े भी स्वच्छ रखना उचित है । क्यों

कि पसीनेके द्वारा निकली हुई चीजें कपड़ोंमें भिद जातीहैं, जो शरीरमें रगड़ खाकर फिर पैठ जाती हैं, और रोग उत्पन्न करती हैं।

भारतवर्षमें बहुधा लोग ज्वरसे पीड़ित रहते हैं, और इसीसे प्रायः बहुतेरे मनुष्य मरजाते हैं, इसका कारण डाक्टर लोग, मलेरिया नामी एक विषैली वायु बताते हैं। बुखारके रोगीकी नाड़ीकी परीक्षा किसी डाक्टर अथवा सुयोग्य वैद्यसे कराना चाहिये क्योंकि इससे सर्दी हो जानेका बहुत भय रहता है, इसकी अच्छी दवा किनीन है, जो सिनकोना वृक्षकी छालसे बनती है। गरीब मनुष्योंके सुभीतेके लिये दो पाईकी किनीनकी पुड़िया डाकखानोंमें बिकती है। हिन्दुस्थानी वैद्य चिरायताका काढ़ा भी ज्वर-नाशक कहते है।

आमाशयमें भोजनके कच्चे कण रह जानेसे बहुधा कीड़े और इन्हींकी बीमारियां उत्पन्न होजाती हैं, और इनकी वृद्धि होनेसे संग्रहणी और अतिसार रोग उत्पन्न होजाते हैं। जो दवा बुखारके लिये उपयोगी है, वही इन रोगोंके लिये भी लाभदायक है। गरिष्ठ भोजन, मैला पानी, कच्चे या सड़े हुए फल कभी न खाना चाहिये, और शरीर गर्म रखना चाहिये। इसके सिवाय पेटकी आंतोंमें ठंढ न लगने

चाहिये। अच्छी दशामें बीमारीके रोकनेके लिये जुलाब लेलेनेसे शरीर दुर्बल होजाता है, और हैजेके समयमें तो कभी जुलाब न लेना चाहिये। अच्छी नींद आना रोगीके आराम होनेका लक्षण है। उसके पास हल्ला न होनेपावे और उससे सदा प्रिय भाषण करना उचित है। बहुधा उपवास करनेसे भी उदर सम्बन्धी बीमारियोंमें लाभ पहुंचता है, क्योंकि इससे आमाशयका दूषित अन्न भलीभांति पच जाता है, और क्षुधाग्नि तीव्र होती है।

बरसातके दिनोंमें बहुधा कच्ची तरकारियां पित्त पैदा करती हैं, जिससे कुआंरके महीनेमें ज्वर आनेका भय रहता है। स्वच्छ हवा, स्वच्छ और हलका भोजन और स्वच्छ जलका सेवन करनेवाला मनुष्य प्रायः कभी बीमार नहीं होता।

पाठ ४१.

कौरव और पाण्डवोंका वैमनस्य।

(महाभारत भाग–२)

द्वितीय = दूसरा। धर्मपत्नी = विवाहित स्त्री। आसक्त = मोहित। प्रवीण = निपुण। अधीश्वर = राज्येश्वर। आवाहन किया = बुलाया। अमर्ष [illegible]

सहायतासे द्रौपदीका वस्त्र इतना बढगया. कि दश सहस्र हाथियोंके समान बलवान् दुःशासन भी उसका अन्त न पासका, इसके पश्चात् धृतराष्ट्रने पांडवोंका सम्पूर्ण अपहृत राज्य लौटा दिया। परंतु दुर्योधनकी प्रेरणासे युधिष्ठिर फिर जुआं खेलनेमें विवश किये गये, और शकुनीके द्वारा फिर इन प्रतिज्ञाओंको परिपालन करनेके लिये द्यूतमें परास्त कियेगयेः— (१) युधिष्ठिर अपने भ्राताओं तथा द्रौपदीके सहित बारह वर्ष मुनिवेषसे वनमें निवास करे, और (२) तेरहवें वर्ष नगरमें छिपकरके रहे। यदि तेरहवें वर्षमें कोई मनुष्य उन्हें पहिचान लेगा, तो फिर पूर्ववत् तेरह वर्षतक वनमें निवास करना पडेगा।

पाठ ४२.

कृषिके उपयोगी यन्त्र।

([illegible]-६)

जो काम बहुतसे आदमियों और पशुओंसे सुगमतासे नहीं होता वह यन्त्रके द्वारा थोडे मनुष्यों और पशुओंसे होजाता है इसलिये यन्त्र परिश्रम बचाते हैं अतएव परिश्रमका मूल्य जितना अधिक होगा उतनाही कम लाभ होगा। भारतवर्षमें मजदूरको अधिकसे अधिक ≡) और अमेरिकामें १)

जिसे मेघनादने अपने बाणसे घायल न किया हो। इसके पश्चात् अपनी विजयसे हर्षित होकर वह जब लंकापुरीमें चला गया, तब नारदजीकी आज्ञासे गरुडने आकर रामचन्द्र और लक्ष्मणजीको नागसमूहोंसे मुक्त किया। पराजयसे क्रोधित दोनों भाइयोंने फिर रावणकी सेनाके बड़े २ वीरोंको राक्षसीसेनाओं सहित मारडाला। अपनी सेनाका महान विनाश देखकर रावणने अपने भाई कुम्भकर्णको युद्धके लिये भेजा, परन्तु रामचन्द्रजीने उसे अत्यन्त सरलतासे अल्प समयमें ही मारडाला।

कुम्भकर्णके मृतक होनेपर मेघनाद, निकुम्भिलामें जाकर गुप्तरीतिसे यज्ञ करनेलगा, जिससे शत्रुलोग इस यज्ञका हाल न जानसकें। गुप्तदूतोंके द्वारा मेघनादके यज्ञका समाचार जानकर विभीषणने रामचन्द्रजीको सचेत कर दिया, तब लक्ष्मणजीने रामचन्द्रजीकी आज्ञासे वहां जाकर बड़ी कठिनतासे तीन दिनोंमें उसे मारा। मेघनादकी मृत्यु सुनकर रावणने स्वतः रामचन्द्रजीपर चढ़ाई की, और अपने पराक्रमसे सम्पूर्ण संसारको चकित करके रामचन्द्रजीके द्वारा प्रशंसनीय मृत्यु प्राप्त की। रामचन्द्रजीने रावणके छोटे भ्राता विभीषणको लंकाका राजा बनाया। फिर विभीषणने रामचन्द्रजीकी आज्ञा पाकर रावणकी

वृद्धि करनेकी इच्छासे नारदमुनि अकस्मात उसके समीप उपस्थित हुए और कौशलसे आठ लकीरें खींचकर कहने लगे कि देखिये! यह आठ लकीरें हैं। इनको जिस ओरसे गिनिये, उसी ओरसे प्रत्येक लकीर आठवीं होतीहै। देवताओंकी माया अत्यन्त प्रबल है, इसी लिये यह जानना अत्यन्त कठिन है, कि आपका शत्रु वसुदेवका आठवां पुत्र किस समय उत्पन्न होगा? नारदमुनिके सन्देह जनक वचन सुनकर कंस अत्यन्त भयभीत हुआ, और उसने वसुदेवजीके उस पुत्रको फिर बुलवाकर और पत्थरपर पटककर मार डाला। इस प्रकार उसने अत्यन्त निठुरतासे उनके लगातर छः पुत्र मारडाले। देवकीके सातवें गर्भमें शेषनागके अवतार बलदेवजी, आये परन्तु परमात्मा नारायणकी आज्ञासे योगमायाने उन्हें वसुदेवजीकी द्वितीय पत्नी रोहिणीकेगर्भमें पलट दिया। इसके पश्चात साक्षात परमात्माके पूर्ण अंश भगवान् कृष्णदेवने देवकीके गर्भसे प्रकट [illegible] किया। अपने शत्रुकी उत्पत्तिका समय समीप जानकर कंसने वसुदेव और देवकीको हथकड़ी और बेड़ीसे जकड़कर कारागारमें बन्द करदिया और उनके चारों ओर अनुरूप पहरेवालोंको नियत करदिया।

बीमारीकी अत्यन्त लाभदायक औषधि है, इसलिये बीमारीके दिनोंमें इसकी एक शीशी अपने पास सदैव रखना उचित है। इन दिनोंमें रातको बहुत देरतक जागना भी न चाहिये।

पाठ ४८.

पांडवोंका वनवास।

(महाभारत—भाग—३)

द्यूत = जुआँ। आखेट = शिकार। अमोघ = अव्यर्थ। आराध्य देव = इष्टदेवता। रक्षा = बचाव। विशाल = भारी। निमंत्रण = न्योंता। प्रायः = बहुधा।

हस्तिनापुरसे द्यूतमें परास्त होकर युधिष्ठिर, अपने भ्राताओं तथा द्रौपदीके सहित द्वैतवनमें पांचवर्ष तक रहे, इसके पश्चात् भगवान् व्यासदेवकी आज्ञासे अर्जुनने हिमालय पर्वतपर छः महीने तक शिवजीके दर्शनके लिये घोर तपस्या की। एक दिन जब वह शिवजीकी पूजा कर रहा था कि अकस्मात् एक वराहके वधकी इच्छासे धनुर्धारी एक किरातको अपने सन्मुख आतेहुए देखा। ईश्वरभावसे अर्जुनने भी उस वराहपर बाण चलाया और किरात और अर्जुनके बाण एकही साथ उस वराहके शरीरमें

दुर्योधन नरेशकी समस्त सेनाके सामन्त गन्धर्वोंसे परास्त होकर भागगये, और चित्रसेनने दुर्योधनको बांधलिया। तब दुर्योधनके मन्त्रियोंने जाकर युधिष्ठिरसे अपने रक्षाकरनेकी प्रार्थना की, उससमय युधिष्ठिरकी आज्ञासे भीमसेन और अर्जुनने गन्धर्वोंको मार भगाया। और अर्जुनकी सम्मतिसे चित्रसेन, दुर्योधन नरेशको युधिष्ठिरके सन्मुख ले आये। अपने निज भ्राताकी यह दुर्दशा देख करके युधिष्ठिरने तुरन्तही चित्रसेनसे दुर्योधनको मुक्त करनेका अनुरोध किया। दुर्योधनने चित्रसेनसे छुटकारा पाकर अत्यन्त लज्जित होकर युधिष्ठिरको प्रणाम किया, और उनकी आज्ञा पाकर अपने अनुगामियों समेत हस्तिनापुर गमन किया।

इस प्रकार बारह वर्ष अत्यन्त कष्टसे वनमें निवास करनेके पश्चात् पाण्डवोंने एक वर्ष विराट राजाके नगरमें गुप्तरूपसे निवास किया। वहां दासीके वेषमें रहनेवाली द्रौपदी पर कुदृष्टि करनेके कारण रसोइयेके वेषमें रहनेवाले भीमसेनने विराट राजाके साले कीचकको मारडाला। कहते हैं कि कीचकमें दस हजार हाथियोंके समान बल था।

कीचककी मृत्युका समाचार सुनकर दुर्योधनने वहां पाण्डवोंके निवास करनेकी आशङ्का करके

बरार, वर्धा, नागपुर, निमाड, मालवा आदि स्थानोंके बैल, बिनौला और ज्वार खिलानेसे अत्यन्त उत्तम होते हैं। पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवधमें ज्वार आदिके झाडोंके छोटे २ टुकडे करके, पानीमें भिगोकर पशुओंको खानेको देते हैं। केवल गेहूंका भूसा खिलानेसे मध्यप्रदेशके उत्तरीय जिलोंके बैल साधारण होते हैं, परंतु छत्तीसगढ तथा अन्य २ धानके कई प्रदेशोंमें केवल धानका पयार खानेसे वहांके पशु दुर्बल तथा लघुकाय होते हैं। बैलोंको चरेर तथा तिवराकी फसल खिलाना विशेष लाभकारक है, इसी प्रकार नमक खिलाना प्रत्येक देश तथा प्रत्येक ऋतुमें निरोगकारक है।

निम्नलिखित उपायसे ग्रीष्म ऋतुमें पशुओंके लिये किसान लोग हरी घास रखसक्ते हैं:—ऊंची तथा सूखी धरतीमें ८ हाथ लंबा, ६ हाथ चौडा और ५ हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें कुआंरकी पकी घास डाल २ कर भरो। फिर एक हाथ गड्ढा खाली रह जानेपर उसपर बांसकी चटाई बिछाकर पीछे सूखी घास पाट दो और उसमें चार दिन तक मिट्टी कूट २ कर उस समय तक डालो, जबतक कि उसपर एक टीलासा न बन जावे फिर इस ऊपरसे ढांके, और आम-

और पंजाबके पश्चिमोत्तर भागमें सिन्धुनदके तटमें रहनेवाले गन्धर्वोंको मारकर भरतजीनेभी अपने दोनों पुत्रोंको उक्त राज्यमें अभिषिक्त किया।

कुछ समयके पश्चात् रामचन्द्रजीने अश्वमेध यज्ञ किया उस यज्ञमें वाल्मीकिजी भी लव और कुशको साथ लेकर आये। उनकी आज्ञासे लव और कुशने मुनिविरचित समस्त रामायण उस यज्ञमें सुनाई। जिससे सम्पूर्ण सभासदों सहित रामचंद्रजीने लव और कुशको सीताके पुत्र होना मान लिया इसके पश्चात् रामचन्द्रजीकी आज्ञासे सीताजी मुनिके साथ यज्ञस्थलमें आई। और उन्होंने सम्पूर्ण सभासदोंके सन्मुख अपने आचरणके संबन्धमें यह शपथ की:-"कि जो मैं लंकामें निर्दोष रही होऊं, तो यह पृथ्वी मुझे अपने भीतर स्थान देवे।" सीताजीके यह वचन समाप्त होते ही साक्षात् पृथ्वी एक दिव्य सिंहासनसहित पृथ्वीसे निकली; और सबके देखते ही सीताजीको उसमें बैठाकर फिर पृथ्वीमें प्रविष्ट होगई रामचन्द्र और सम्पूर्ण दर्शकगण यह आश्चर्य देखकर भौचक रहगये, और रामचन्द्रजीने यह घटना देखकर अत्यन्त शोकित होकर प्राणपरित्याग करना चाहा. परन्तु वाल्मीकिजीने भविष्यवृत्तान्त कहकर उनका दारुण शोक शांत किया फिर यज्ञ समाप्त होनेपर

जब दुर्वासा मुनि चलेगये तब अयोध्यापति रामच-न्द्रजीने अपनी प्रतिज्ञानुसार वशिष्ठ आदि मन्त्रियोंकी सम्मतिसे लक्ष्मणजीको परित्याग करादिया । उस समय भ्रातृप्रेमी लक्ष्मणजीने सरयूनदीमें योगबलसे प्राण परित्याग करदिया । तब सीता और लक्ष्मण-जीकी मृत्युसे परम शोकित रामचन्द्रजीने भी लव और कुशको अयोध्याका राज्य समान भागोंमें बांट दिया । और विभीषणको कल्पकी समाप्तितक लङ्कामें राज्य करने तथा हनुमानको हिमालय पर्वतपर धर्म तथा सज्जनोंकी रक्षा करते हुए निवास करनेका अनु-रोध किया, और अंगदको किष्किधा नगरीका राज्य प्रदान किया । फिर सुग्रीव आदि प्रधान वानरों तथा वशिष्ठ जाबालि आदि ऋषियों और भरत शत्रुहन तथा सम्पूर्ण प्रजावर्ग सहित सरयूमें प्राण परित्याग करके रामचंद्रजीने अपने सनातन विष्णु लोकको गमन किया । हिन्दूलोग भगवान् रामचंद्रजीको साक्षात् विष्णुदेवका अवतार मानतेहैं ।

राक्षस क्रम २ से गोकुलमें भगवान्‌के वध करने की इच्छासे आये, पर सब ही परम पराक्रमी वसुदेवकुमारके द्वारा वध किये गये।

यमुनाजीके प्राचीन हृदमें बहुत दिनोंसे रहनेवाले कालीनागको कृष्णदेवने अपने पराक्रमसे बांधकर रमणकद्वीपको भेज दिया और इन्द्रदेवके गोवर्धनकी पूजा होनेपर कोपित होकर व्रजमंडलको जलमें डुबो देनेके उद्देश्यसे भयंकर वर्षा करनेपर भगवान् कृष्णदेवने अपनी छोटी उंगलीकी नोंकपर सात दिन तक गोवर्धन पर्वतको धारण किया था। इस प्रकार कृष्णदेवके अत्यन्त पराक्रमको देखकर कंस अत्यन्त व्याकुल हुआ। इसी समय नारदमुनिने आकर कंससे वसुदेवजीके श्रीकृष्णको गोकुलमें छोड आनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और यह भी कहाः— "कि आप शिवयज्ञ करनेके मिससे श्रीकृष्ण और बलरामको यहां बुलाकर वध कराइये, क्योंकि शत्रुको कभी छोटा मानना न चाहिये। कंसने नारदजीकी सम्मति सुनकर महायज्ञ करना स्वीकार किया। बड़े २ राजा महाराजाओंको यज्ञमें आनेके लिये निमंत्रण भेजा गया और राजसभाके द्वारपर एक मतवाला हाथी खड़ा किया गया, और राजसभामें भी बड़े २ मल्ल कृष्णदेवके वध करनेके लिये—

सन १८३८ ईस्वीमें दो अंग्रेजी सेनाएं काबुलमें बरगयीं, पहिली फिर होकर कंदहारपर और दूसरी गजनीके मार्गसे काबुलपर। इन्होंने क्रमशः काबुल जीतकर शाहशुजाको अमीर बनाया। और दोस्त मुहम्मदको कैद करलिया, लेकिन थोड़े दिनोंमें अफगानोंने शाहशुजा और अंग्रेजी रेजीडेंड दोनोंको मारडाला। और अंग्रेजोंकी सम्पूर्ण सेना खैबर-घाटीपर घेरकर मारडाली। केवल एक आदमी जीता लौटकर हिन्दुस्तानमें आया। इस अपमानके बदला लेनेके लिये फिर अंग्रेजी सेनाओंने काबुलको चढ़ाई की, और काबुलको जीतकर वहां फिर दोस्त-मुहम्मदको अमीर बनाकर हिन्दुस्तानको लौट आई। इसे अफगानिस्तानकी पहिली लड़ाई कहते हैं।

पंजाब और सिन्ध मुगलोंके राज्यके सूबे थे, पीछेसे इन्हें अफगानोंने विजय करलिया लेकिन फिर सिन्ध बलूचियोंने और पंजाब सिक्खोंने छीनलिया जब काबुलसे अफगानोंका [illegible] तब सिन्धके अमीर [illegible] अङ्गरेजोंने इन्हें [illegible]

मुगल बादशाह [illegible] कन्धार [illegible] कठोरतासे [illegible]

भीषण संहार करके द्रोणाचार्यने जब यह लोक परित्याग किया तब महाबलवान कर्ण, दुर्योधनकी सेनाके अधिनायक हुए। इंद्रदेवकी शक्तिसे जब कर्णने भीमसेनके पुत्र घटोत्कचका वध किया, तब अर्जुनने कर्णको विरथ जानकर युद्धस्थलमें संहार किया। कहतेहैं, कि कर्णके समान भयंकर युद्ध भीष्म तथा द्रोणाचार्यने भी न कियाथा। युद्धके सत्रहवें दिन दुर्योधनने शल्यको कौरवीय सेनाका अधिनायक बनाया, और केवल दोपहर तक घोर युद्ध करके वे भी युधिष्ठिरके द्वारा संग्रामभूमिमें मारेगये। तब सम्पूर्ण सेनाके विनष्ट होजानेपर दुर्योधन एक तालाबकेजलमेंभागकर घुसगयापरंतु यहसमाचार पाकर पाण्डवोंने उसतालाबमें आक्रमण किया, और भयानक गदायुद्धमें भीमसेनने दुर्योधनकी जंघा तोड़डाली। उसी दिन अश्वत्थामाने रातको पाण्डवोंके शिविरमें प्रवेश करके पांडवीय सेनाके बचेहुए सम्पूर्ण सैनिकोंको और पाण्डवोंके पांचों पुत्रोंको मारडाला। प्रातःकाल पाण्डवोंने व्यासाश्रममें जाकर अश्वत्थामाको युद्धके लिये आवाहन किया, तब अश्वत्थामाने पाण्डवोंके गर्भान्वित बालकके विनाशके लिये अत्यन्त भयङ्कर बाण चलाया परन्तु व्यासदेवके उपदेशसे उसने अपने मस्तककी मणि निकालकर पाण्डवोंको देदी, और स्वतः

पाठ ५७.

कोलम्बस।

इस प्रसिद्ध मनुष्यका जन्म सन १४३६ ई. में जिनोआ नगरमें हुआ, जो अब इटली देशमें सम्मिलित है। वह बालकपन हीसे भूगोलविद्याकी पुस्तकें अध्ययन किया करता था। उसने थोडे दिनोंतक पाठशालामें अभ्यास किया और १४ वर्षकी अवस्थामें पाठशाला छोडकर जिनोआके जहाजपर नौकर होगया। उन दिनो मदिरा और कनेरी द्वीपोंके उस पार कोई नहीं जासक्ता था, और लोग यही समझते थे, कि इन टापुओंके उसपार पानीके सिवाय और कुछ नहीं है। कोलम्बसने पृथ्वीके आकारक विचार करके कहा, कि यदि कोई अटलांटिक महासागरके पश्चिमी ओर जावे, तो वह अवश्य ही नये २ द्वीप देखेगा और उस मार्गसे हिंदुस्थानको भी पहुंच जावेगा। जब वह पोर्तगाल देशमें था, तब मदिरा और कनेरीको कई बार गया था. इससे नाविक विद्यामें अत्यन्त प्रवीण होगया था। कोलम्बसको यह निश्चय होचुका था, कि मैं अटलांटिक महासागरकी यात्रामें नये २ देश और द्वीप ढूंढ निकालूंगा। इस लिये उसने पोर्तगाल और इंग्लिस्तानके राजाओंसे

होगया, उनको सरकारी राज्य कहते हैं। जो २ देश विजय करनेको अवशेष रहगये, वे स्वतंत्र राज्य कहातेहैं, जैसेः-नैपाल और भूटान। बहुतसे नरेशोंने सर्कारकी अधीनतामें रहना स्वीकार कर-लिया, जैसेः-मैसूर और हैदराबाद आदि, यह सब राज्य अबतक अंग्रेजोंकी अधीनतामें चलेजाते हैं, और रक्षित राज्य कहलाते हैं। क्योंकि सर्कार अंग्रेज इनकी सहायता करती है। यह सब होनेके पश्चात् ऐसा जान पडता था, कि अब अंग्रेजोंके लिये कोई भी झगडा हिन्दुस्थानमें अवशेष नहीं रहा। जिसका विवरण इसप्रकार हैः-बंगाल महा-तेकी सेनामें अवधके पुरविये सिपाही अधिकतासे थे, और उनकी शूरतापर अंग्रेज सर्कार भी प्रसन्न थी परन्तु उनके मनमें इस बातका महान गर्व होगया था, कि हमारेही कारण सर्कारने हिन्दुस्थानका राज्य पाया है। इसके सिवाय सर्कार अंग्रेजने अवधके नव्वाबको अपने प्रदेशमें अप्रबन्ध रखनेके कारण गद्दीसे उतारदिया था। इससे अथवा किसी कारणसे यह लोग अंग्रेजोंसे अप्रसन्न थे। इससे इन्होंने सेनामें यह गप्प उडाईः-कि सर्कारने बन्दूकोंकी कारतूसोंमें सुवर और गायकी चर्बी लगाई है। और इन्हें दांतसे काटकर हिन्दू और मुसलमानोंको बंदूकोंमें भरना

स्वीकार की। इसके सिवाय अवधके कईएक जमीदार (जो राजा कहेजाते थे) अंग्रेजोंके विरोधी होगये, पर कलकत्तेकी सेनाके आनेपर यह सब जंगलोंमें भागगये। जिनका आजतक पता नहीं है। इसी समय झांसीकी प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई भी बागियोंमें मिलगयी, जो बड़ी शूरतासे युद्ध करके मारी गई फिर पंजाबकी सेनाने सिक्ख औरगोरखोंकी सहायतासे दिल्लीके बागियोंको परास्त करके नगरपर अधिकार करलिया, और बादशाहको कैद करके रंगून भेजदिया। इसी प्रकार बम्बईकी सेनाने मध्य हिन्दुस्थानमें शान्ति स्थापन करदी। वास्तवमें यह बलवा सम्पूर्ण हिन्दुस्थानवासियोंकी ओरसे नहीं हुआथा। परन्तु केवल बंगाल अहातेकी सेनाने यह बलवा किया था, जिसके साथ बंगाल, बिहार और संयुक्तप्रदेशके कुछ लोग सम्मिलित हुए थे। परन्तु यहांके बड़े २ राजा और जमीदार अंग्रेजोंके [illegible] क्योंकि वह यह जानते थे कि [illegible] हमलोग [illegible] और पंजाबकी [illegible] थी

पुत्र और एक२ कन्या हुई थी, और कई सहस्र शिक्षक उनकी शिक्षाके लिये नियत थे। मगधदेशके राजा, पराक्रमी जरासन्धने २०८०० राजाओंको अपने कारागारमें कैद करलिया था, और शिवयज्ञमें उन राजाओंको बलि देना चाहता था। यह समाचार जानकर श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन, ब्राह्मणका रूप धारण करके उस राजाके पास गये, और द्वंद्व-युद्धभिक्षा चाही। जरासन्धने उनसे द्वंद्वयुद्ध करना स्वीकार किया, तब भीमसेन और जरासन्धसे २७ दिन तक गदायुद्ध हुआ। अट्ठाइसवें दिन भीमसेनने उसे दोखण्ड करके मारडाला, और उसके पुत्र सहदेवको श्रीकृष्ण देवने उसकी गद्दीपर बैठाया।

देखती थी। प्रत्येक प्रार्थी इसके पास जाकर अपना दुःख कहसक्ता था, और इसके राज्यकी सम्पूर्ण प्रजा इसको माताके समान सन्मान करती थी। यह रानी बड़ी धर्मात्मा थी। इसके मनमें सदाकाल परमेश्वरका भय बनारहता था इसीसे यह सदा कहाकरती थीः– कि हमको अपने कामोंका हिसाब एक दिन अनन्त शक्तिमान ईश्वरको समझाना पड़ेगा। यह दयावान रानी गर्मीकी ऋतुमें जगह २ पौशाला बैठाती थी शीतऋतुमें कम्बल और कपड़ बांटती थी, और यथाशक्ति अशक्त मनुष्योंको भोजन देती थी। नदियोंमें मछलियोंको भोजन देनेके लिये आदमी नौकर रक्खे गये थे, और चिड़ियोंके लिये पके हुए खेत मोल लियेजाते थे। इसके पहिले भीलोंकी लूट-मारके कारण व्यापारी निर्भयतासे अपना व्यापार

नियत हैं। स्वच्छताके प्रचार तथा औषधि आदि द्वारा रोगोंके निवारण करनेके लिये डाक्टर और सिविलसर्जन मुकर्रर हैं।

पाठ ६३.

पत्र लेखन प्रणाली।

(भाग-१)

चिट्ठियां तीन प्रकारकी होती हैं. जैसेः-(१) छोटोंकी ओरसे बड़ोंको (२) बड़ोंकी ओरसे छोटोंको (३) बराबरवालोंको। श्रेष्ठता तथा हीनताका विचार दो प्रकारसे किया जाता हैः- पहिले तो नातेदारीमें और दूसरे. मित्रता तथा जानपहिचानमें। नातेदारीमें बड़प्पन सम्बन्धकी ज्येष्ठता पर माना जाता है, परन्तु अवस्था पर किसी प्रकार भी विचार नहीं किया जाता। परन्तु मित्रता और जानपहिचानमें अधिकार, धन और गुणमें बड़प्पन समझा जाता है। यदि [illegible] अवस्थामें बड़ा अधिकारमें प्रधान धनवान [illegible] तथा ज्ञानवान् हो परन्तु जब वह अपनेसे [illegible] सम्बन्धीको पत्र लिखेगा, तो अवश्य [illegible] बड़प्पन सहित लिखेगा। इसी प्रकार मित्रता [illegible] जानपहिचानमें अधिकार धन तथा विद्यामें [illegible] मनुष्यको चाहे वह अवस्थामें

ब्राह्मणोंमें बराबरवालोंकी ओरसे परस्पर "प्रणाम" अथवा "नमस्कार" और बड़ोंकी ओरसे छोटोंको "आशीर्वाद" लिखनेकी प्रथा है। क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, ब्राह्मणोंको "प्रणाम" "पालागन" अथवा "दण्डवत्" और आपसमें "राम राम" "सीताराम" "बन्दगी" "जुहार" "जयगोपाल" आदि लिखते हैं।

दोहा।

श्री लिखिये षट गुरुनको, पांच स्वामि रिपु चार।
तीन मित्र द्वय भृत्य को, एक पुत्र अरु नार॥

बड़े २ महात्माओंको श्री ११०८ तथा राजा महाराजाओंको श्री १०८ लिखी जाती है।

पता ठिकाना अथवा सिरनामा।

यदि स्थान प्रसिद्ध हो, तो जिसके नाम चिट्ठी भेजना हो, उसका नाम पहिली लकीरमें, जिस मुहल्लेमें भेजना हो उसका नाम दूसरी लकीरमें और जिस नगरमें भेजना हो उसका नाम तीसरी लकीरमें लिखना चाहिये।

यदि स्थान [illegible] पहिली लकीर में नाम दूसरीमें [illegible] उसका और [illegible] जिसके [illegible] नाम [illegible] लिखते हैं।

पाठ ६४.

पत्रलेखन प्रणाली–(भाग २)

पत्र शिष्यकी ओरसे गुरुको।

श्रीकृष्णाय नमः।

सिद्धश्री ६ सर्वोपरि विराजमान, सकलगुण-निधान वेदमूर्ति गुरुजी महाराजको चरणसेवक रामलालका प्रणाम पहुंचे। आगे आज बीमारीके कारण मैं पाठशालामें उपस्थित न होसका, और लगभग एक सप्ताह तक अभी आ भी न सकूंगा इसलिये विनय सहित प्रार्थनाकर आशावान हूं, कि सात दिनका अवकाश श्रीमान् प्रदान करेंगे। उचित जान निवेदन किया। फ०ता०७फरवरी सन१९१६ई०

विनीत सेवक,

रामलाल.

पत्र पुत्रकी ओरसे पिताको।

[illegible] ६ [illegible] विराजमान [illegible]

[illegible]

पावती (रसीद)

मैं कि हीरालाल वल्द करुणाशंकर चौबे साकिन जैजैपुर तहसील जांजगीर और जिला बिलासपुरका हूं। जोकि मैंने पोलिस स्टेशन जैपुरके स्टेशन हौस और पोलिस लैनकी वरसाती मरम्मत ठेकेसे की है, उसकी कीमत १५० डेढसौ रुपये, सब इंस्पेक्टर साहिबसे पागया। इसलिये रसीद लिखदी, कि सनदरहे तथावक्तपर काम आवे. फ.ता.१९-५-१९१६ई०।

गवाह द: हीरालाल चौबे,

१ चूड़ामणि मिश्र जैजैपुर. जैजैपुर.

२ गदाधरसाव पानी जैजैपुर.

पाठ ६५.

पत्र आदिके उदाहरण।

(पत्रलेखन प्रणाली भाग-३.)

(प्रार्थनापत्र)

दराले दूंगा। और जब रुपया अथवा ब्याज दिया करूंगा तो स्टाम्पकी पीठपर पावती लिखाऊंगा। जबतक रुपया ब्याज सहित न देदूंगा, तबतक ब्याज चालू रहेगा इससे यह टीप होशहवास तथा राजीखुशीसे लिखदिया कि सनद रहे वो वक़्तपर काम आवे। फक़त ता० २७-५-१९१६ दिन शनिवार ज्येष्ठ कृष्ण ११ संवत् १९७३ विक्रमाब्द

साक्षी. हस्ताक्षर. बुद्धू कलार

१ झुंजरामबानी मस्तूरी. मस्तूरी.

२ तीरथराम नाई मस्तूरी

रहननामा।

मनके हीरालाल चमार वल्द फालूराम साकिन मस्तूरी तहसील वो जिला बिलासपुरका हूं जो कि मैंने केशरीसिंहमालगुजार साकिन मुलमुला.तहसील जांजगीर जिला बिलासपुरसे ३२५ तीनसौ पचीस रुपया अक्षराङ्क मि[illegible] चहेरेदार गवर्नमेंटी बाबत अदा करने सर्कारी [illegible] आजकी मितीमें ऋण लिये है, जिनका [illegible]) बाहर आना सैकड़ा मा[illegible] परिवर्तिनमें हमने आपके विश्वास[illegible] जिसका नक़शा निम्नलिखित है। जब [illegible] रुपये ब्याज सहित अदा करदूंगा, [illegible] निम्नलिखित मकान

जावे ? यह सुनकर व्याघ्रने उत्तर दिया:-हे पथिक ! पहिले यौवनावस्थामें मैं अत्यन्त दुराचारी था. अनेक गौ तथा मनुष्योंकी हत्या करनेसे मेरे पुत्र तथा स्त्री मरगये। और वंशहीन होगया। इसके पश्चात् एक धर्मात्माने मुझे उपदेश दिया:-कि आप दान धर्म आदि प्रतिपालन कीजिये। सो उसके उपदेशसे मैं प्रतिदिन स्नान करके दान दियाकरता हूँ। दांत और नख भी गलगये हैं, तिसपर भी तुम विश्वास क्यों नहीं करते ? इस समय मैं इतना विरक्त होगया हूं, किअपना सुवर्णका कंकण भी किसीको भी देना चाहता हूं। तो भी व्याघ्रको मांसभक्षी जानकर इस समय मेरा कोई विश्वास नहीं करता. यद्यपि मैं धर्मशास्त्रके तत्त्व भलीभांति जानता हूँ-सुन।

जिसप्रकार अपना प्राण अपनेको प्रिय है, उसी प्रकार अन्यान्य जीवोंको भी अपना प्राण प्रिय है। साधु पुरुष प्राणियोंपर दया करते हैं। परस्त्रीको माताके समान पराये द्रव्यको ढेलेके समान और सम्पूर्ण प्राणियोंको जो अपने समान मानता है वही पण्डित है। तुझे अत्यन्त दरिद्री जानकर मैं यह कंकण तुझे देनेको उद्यत हूं। सो तू इस सरोवरमें स्नान करके सुवर्णका कंकण [illegible] वच-नका विश्वास करके लोभके वश [illegible] ज्योंही वह

जावे ? यह सुनकर व्याघ्रने उत्तर दियाः—हे पथिक ! पहिले यौवनावस्थामें मैं अत्यन्त दुराचारी था. अनेक गौ तथा मनुष्योंकी हत्या करनेसे मेरे पुत्र तथा स्त्री मरगये। और वंशहीन होगया। इसके पश्चात् एक धर्मात्माने मुझे उपदेश दियाः—कि आप दान धर्म आदि प्रतिपालन कीजिये। सो उसके उपदेशसे मैं प्रतिदिन स्नान करके दान दियाकरता हूँ। दांत और नख भी गलगये हैं, तिसपर भी तुम विश्वास क्यों नहीं करते ? इस समय मैं इतना विरक्त होगया हूं, किअपना सुवर्णका कंकण भी किसीको भी देना चाहता हूं। तो भी व्याघ्रको मांसभक्षी जानकर इस समय मेरा कोई विश्वास नहीं करता. यद्यपि मैं धर्मशास्त्रके तत्त्व भलीभांति जानता हूँ—सुन।

जिसप्रकार अपना प्राण अपनेको प्रिय है, उसी प्रकार अन्यान्य जीवोंको भी अपना प्राण प्रिय है। साधु पुरुष प्राणियोंपर दया करते हैं। परस्त्रीको माताके समान पराये द्रव्यको [illegible] समान और समस्त प्राणियोंको [illegible] समान जानता है वही [illegible] है। तुझ अत्यन्त [illegible] जानकर मैं यह कंकण तुझे देनेको उद्यत हूं। सो [illegible] [illegible] [illegible] स्नान करके सुवर्णके कंकण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वच- नका विश्वास करके लालच [illegible] [illegible] [illegible] वह

दौड़कर लाठी फेंकी, पर इस प्रहारसे शृगाल ही मारा गया। धर्मशास्त्रमें ऐसा लिखा है:—तीन दिनमें, तीन पक्षमें, तीन महीनेमें, तीन वर्षमें महान पुण्य, तथा पापका फल मनुष्योंको इसी मृत्युलोकमें प्राप्त होजाता है।

पाठ ७८.

अहिंसाप्रचारक बुद्धदेव।

जिस समय भारतवर्षमें सदाचार धर्मका लोप हो रहा था, उस समय जिस महात्मा बुद्धदेवने सदाचार और अहिंसाधर्मका प्रचार किया था। उसका संक्षिप्त वृत्तान्त इस पाठमें लिखा जाता है।

ईस्वी सनके छःसौ वर्ष पूर्व कपिलवस्तुमें शुद्धोदन नामक एक क्षत्रिय राजा राज्य करता था। यह राज्य [illegible]

तानकर लाठी फेंकी, पर उस प्रहारसे शृगाल ही मारा गया। धर्मशास्त्रमें ऐसा लिखा है:-तीन दिनमें, तीन पक्षमें, तीन महीनेमें, तीन वर्षमें महान पुण्य, तथा पापका फल मनुष्योंको इसी मृत्युलोकमें प्राप्त होजाता है।

पाठ ७८.

अहिंसाप्रचारक बुद्धदेव।

जिस समय भारतवर्षसे सदाचार धर्मका लोप हो रहा था, उस समय जिस महात्मा बुद्धदेवने सदाचार और अहिंसाधर्मका प्रचार किया था। उसका संक्षिप्त वृत्तान्त इस पाठमें लिखा जाता है।

ईस्वी सनके छःसौ वर्ष पूर्व कपिलवस्तुमें शुद्धोधन नामक एक क्षत्रिय राजा राज्य करता था। यह राज्य उस समय [illegible] उत्तरकी ओर था। जहांसे [illegible] पर्वत दीख पड़ता है। इस राजा[illegible] पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम [illegible] पीछेसे गौतमबुद्ध [illegible] और [illegible] नामसे विख्यात [illegible] स्थान

र हुआ। उसका कहना है:-"कि उसी समय मुझे मुक्तिका श्रेष्ठ पथ प्राप्त हुआ!" तब उसने तपस्या करना छोड़कर मनको सदाचार और अहिंसा धर्मकी शिक्षादेना प्रारम्भ किया। और इसी समयसे वह बुद्ध अर्थात ज्ञानवानके नामसे प्रख्यात हुआ। फिर उसने बनारसके समीप लोगोंको उपदेशदेना आरम्भ किया। उस समय केवल थोड़ेसे साधारण मनुष्य और स्त्रियोंने पहिले उसका धर्म स्वीकार किया, पर पीछेसे असंख्य मनुष्य उसके मतके माननेवाले होगये। कुछ दिनोंके पश्चात् जब वह उपदेश देते हुए अपने देशको गया, उस समय उसके वृद्ध माता पिता और स्त्री तथा पुत्रने भी उसका उपदेश ग्रहण करलिया। वह आठ महीनोंतक धर्मोपदेश करताहुआ इतस्ततः घूमता फिरता था और बरसातमें कहीं ठहरजाता था। जहां उपदेश सुननेवालोंकी भीड़ दिनरात उसके समीप लगी रहती थी। फिर उसने अपने [illegible] शिष्योंको अपने समान [illegible] घूमकर लोगोंको उपदेश करनेकी [illegible] [illegible] ८० वर्षकी अवस्थामें अझीरके [illegible] नीचे वह मृत्युको प्राप्त हुआ।

बुद्धकी शिक्षानुसार [illegible] दुःख सब मिलते हैं। और पूर्वजन्मके [illegible] [illegible] [illegible]

५० करोड़से अधिक अर्थात् हिन्दुस्थानकी मनुष्यसंख्यासे डेवढे और सम्पूर्ण पृथ्वीकी जनसंख्याके दो पंचमांश हैं। ईसाई और मुसलमानी धर्मके समान यह भी पृथ्वीमें प्रधान धर्म माना जाता है, और इसके माननेवाले इन दोनों धर्मसे अधिक हैं।

इस मतके प्रचारक अपने धर्मकी शिक्षा लोगोंमें घूम फिरकर दिया करते थे, परन्तु इन्होंने कभी अपने मतको दुष्टता और बलात्कारसे प्रचार करनेकी इच्छा न की। और बुद्धदेवके शिष्य समय २ पर ईसाई धर्मके समान सामयिक जलसे भरकर प्राचीन नियमोंमें परिवर्तन भी किया करते थे। इनका पहिला बड़ा जल्सा सन् ईस्वीके ५४३ वर्ष पूर्व पटना नगरमें हुआ। दूसरा जल्सा सन् ईस्वीके ४४३ वर्ष पूर्व, और तीसिरा जल्सा मगध वा विहारके प्रसिद्ध राजा अशोकने सन इस्वीके २४४ वर्ष पहिले किया था।

इस राजाने बौद्धधर्मकी अत्यन्त उन्नति की थी और इस धर्मकी शिक्षा देनेके लिये दूर २ उपदेशक भेजेथे, और आजतक अशोकके [illegible] एक आदेश भारतवर्षके भिन्न २ स्थानोंमें स्तूपों और चट्टानोंमें खोदेहुए पाये जाते हैं। सुनते हैं कि अशोक ६४ सहस्र बौद्ध धर्मके साधुओंको नित्य भोजन दिया करता था। इसीकारण मगधदेशका नाम विहार